



Govt. Kamla Nehru Mahila Mahavidyalaya Damoh (M.P.)-



SSR for NAAC III Cycle 2022

- ❖ AISHE ID: C-19132
- ❖ Established in 1964
- ❖ First & only Women College in Damoh Region
- ❖ Affiliated to Maharaja Chhatrasal Bundelkhand University, Chhatrapur



Criterion 3

Research, Innovation and Extension

3.3 Research Publications and Awards

3.3.2 Numbers of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceeding per teacher during last five years.

Ph: 07812-222385

Email: hegkngcdam@mp.gov.in

Website: <http://www.knmmdamoh.in/>



Office of The Principal Govt. Kamla Nehru Mahila Mahavidyalay

Damoh M. P.

Telephone ☎ 07812 -222385 Email- hegkngcdam@mp.gov.in

"NAAC Accredited B+"



SSR/NAAC/186

Date- 13/06/2023

Declaration

This is to declare that the information, reports, true copies and numerical data etc. Furnished in this file as supporting documents is verified by IQAC and found correct.

Hence this certificate


13/6/23



13/6/23
Dr. G. P. Choudhary



Index

3.3 Research Publications and Awards

3.3.2 Numbers of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceeding per teacher during last five years.

Sr. No.	Theme	Activity/program/documents	Page No.
1.	Dr. Mudita P. Shrivastav	Ajadi ke Sangharsh me yogdaan dene wale Vibhina Kranti veero ka Yogdaan P.N. 201-207	1-4
2.	Dr Aradhana Shrivastav	Corona Virus Evum Mansik Tanav P.N. 46 2021	5-8
3.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	Corona Prabhavit ArthvyawasthaMme Jaan Fukta Atam Nirbhar Bharat Abhiyaan :Ek AarthikVishleshan P.N. 78.	9-14
4.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	Kuposhan ki aag se khaakhota bachpan PN. 262-275.	15-21
5.	Nayantara	Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm 2021.	22-25
6.	Smt. Preeti Verma	Corona Virus evumMansikTanav P.N. 55 2021.	26-30
7.	Smt. Surekha Badole	Corona Virus evumMansikTanaav P.N. 63 2021.	31-35

8.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	Pradooshankigiraf my fastahuasamposhaneeyvikaas PN.	36-39
9.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	BharteeyArthvivstha par corona virus kaprabhav PN. 129-139.	40-45
10.	Dr. Mudita P. Shrivastav	Vridhaawastha evum Shaskhiya Neetiya 2019.	46-50
11.	Shri Ankit Kumar	MahirshidayanandkratbhashyeNiruktprabhav	56
12.	Dr. Aslam Khan Asst. Prof.	Rajasv Vradhhika Rambaan Upaay GST PN: 37-47.	57-61
13.	Smt. Jaya Ahirwar	Gareebi or aarthik vikas 2018.	62-64
14.	Dr. Aslam Khan	Vartmaan aarthik mudde avm chunotiya 2017-2018	65-67
15.	Dr. Aradhana Shrivastav	Fast Foods Ka balko ke shareerk avm mansik vikaas pr prabhav ka aadhayn.	68-69

SERIAL NO.-1: Book Chapter: Dr. Mudita P. Shrivastav: Ajadi ke Sangharsh Me Yogdaan Dene Wale Vibhina Krantiveero Ka Yogdaan .

आजादा के अमृत महोत्सव में क्रांतिवीरों की अमरगाथा

संरक्षक
डॉ. (श्रीमती) प्रीति रेखा चन्द्रा

सम्पादक
डॉ. (श्रीमती) पप्पी चौहान



श्री विनायक पब्लिकेशन

आगरा 282007

Cont.....

LIST OF AUTHORS

1. Dr. Pappi Chouhan
Asstt. Professor (History)
Nachiketa College, JBP (M.P.)
2. Ratna Singh
Research Scholar
Department of Political Science (B.H.U. Varanasi U. P.)
3. Dr. Sanket Kumar Chouksey
Asstt. Professor (History)
Rajmata Sindhiya Govt Girls P. G. College, Chhindwara (M.P.)
4. डॉ. स्वाति शुक्ला
सहायक प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय काला सल्ला
5. Dr. Shabana Anjum
Principal, Anjuman islamia College, JBP (M.P.)
6. Dr. Anuradha Chandel
Asstt Professor, Anjuman Islamia College JBP (M.P.)
7. Smt. Reeta Dubey,
Asstt-Professor,
Nachiketa College JBP. (M.P.)
8. डा. लता पवार
सहायक प्राध्यापक, रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
9. डॉ. नैसर्ग परीहार
सहायक प्राध्यापक, रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
10. डॉ. हरिमोहन दुर्गासिंह
सहायक प्राध्यापक, रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल
11. Ayush Yadav
Research Scholar
Department of Political science (B.H.U. Varanasi, U.P.)
12. Dr. Hemant Kumar Malviya
Professor
Department of Political science (B.H.U. Varanasi, U.P.)
13. Mahesh Koshtha
Asstt. Professor.
Nachiketa College JBP. (M.P.)
14. Smt. Neerja Garg,
Asstt. Professor,
Nachiketa College JBP. (M.P.)
15. श्रीमती रेखा श्रीवास्तव
शोधार्थी
16. Arun Kumar Gondane
Research Scholar (History)
Barkatullah University Bhopal (M.P.)
17. डॉ. गोपेन्द्र मिश्र
सहायक प्राध्यापक
18. Dr. Vasundhara Sharma
Asstt. Professor
Nachiketa College, JBP (M.P.)
19. डॉ. अभिजीत सिंह
सहायक प्राध्यापक
महात्मा गांधी महाविद्यालय नर्मदापुर
20. Miss Jyeshtha Tiwari
Asstt. Professor
Nachiketa College JBP (M.P.)
21. श्रीमती रीना सेलेकी
शोधार्थी
22. Dr. Ritu Tiwari,
Asstt. Professor
Nachiketa College JBP (M.P.)
23. सफ़ातुल्ला खान कुरेशी
सहायक प्राध्यापक महात्मा गांधी महाविद्यालय नर्मदापुर
24. Abhishek Singh Bagri
Student,
Nachiketa College JBP (M.P.)
25. Dr. Rakesh Kushwaha,
Asstt. Professor,
Nachiketa College, JBP (M.P.)
26. Chunchun Kr. Bharti,
Barkatullah University, Bhopal (M.P.)
27. Ratnesh Verma
Asstt. Professor,
Nachiketa College, JBP (M.P.)
28. Mrs. Snehlata Dubey.
H.O.D. Department of Arts,
Nachiketa College JBP (M.P.)
29. Shri Ravindra Singh Chandel,
Registrar,
Nachiketa College, JBP (M.P.)
30. Dr. Mudita Praveen Srivastava
Associate Professor & H.O.D department of Sociology,
Govt. Kamla Nehru Women's College, Damoh (M.P.)
31. Dr. Umesh Deepankar
Guest faculty (Sociology)
Govt. Kamla Nehru women's College Damoh (M.P.)
32. Miss Nidhi Sajwan
Research Scholar (History)
Barkatullah University Bhopal (M.P.)
33. Shri Ajay Shukla
Asstt. Professor

P.N. 201-207.

Cont.....

27

आजादी के संघर्ष में योगदान देने वाले विभिन्न क्रातिवीरों का योगदान

डॉ. श्रीमती मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव (सह प्राध्यापक)

डॉ. उमेश दीपांकर (अतिथि विद्वान)

सारांश

भारत में स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन दो प्रकार का था, एक आहिंसक एवं दूसरा सशस्त्र भारत के आजादी के लिए 1857 से 1947 के बीच जितने भी संघर्ष हुए स्वतंत्रता का सपना संजोये क्रांतिकारियों और शहीदों की उपस्थित सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती के जितनी भक्ति और याद मातृभूमि की सेवा और उसके लिये मर-मिटने की जो भावना उस समय थी, आज उसका नितान्त अभाव हो गया।

क्रान्तिकारी आंदोलन का समय सामान्यतः लोगों ने 1857 से 1942 तक माना है। श्रीकृष्ण सरल का मत है कि इसका समय सन् 1757 अर्थात् प्लासी के युद्ध से सन् 1961 में गोव मुक्ति के साथ ही भारतवर्ष पूर्ण रूप से स्वाधीन हो गया। प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष के असफल हो जाने पर भी विद्रोह के अग्नि ठंडी नहीं हुई। आजादी के संघर्ष में कुका विद्रोह, चरबीयुक्त कारतूस का विरोध, हड़पनीति का विरोध विलय नीति का विरोध नमक पर टैक्स जैसे—कार्यों के कारण संघर्ष हुआ। मंगल पाण्डेय, सुभाष चंद बोस, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, नाना साहब आदि क्रांतिकारियों ने संघर्ष में योगदान दिया।

Cont.....

204 | श्री विनायक पब्लिकेशन

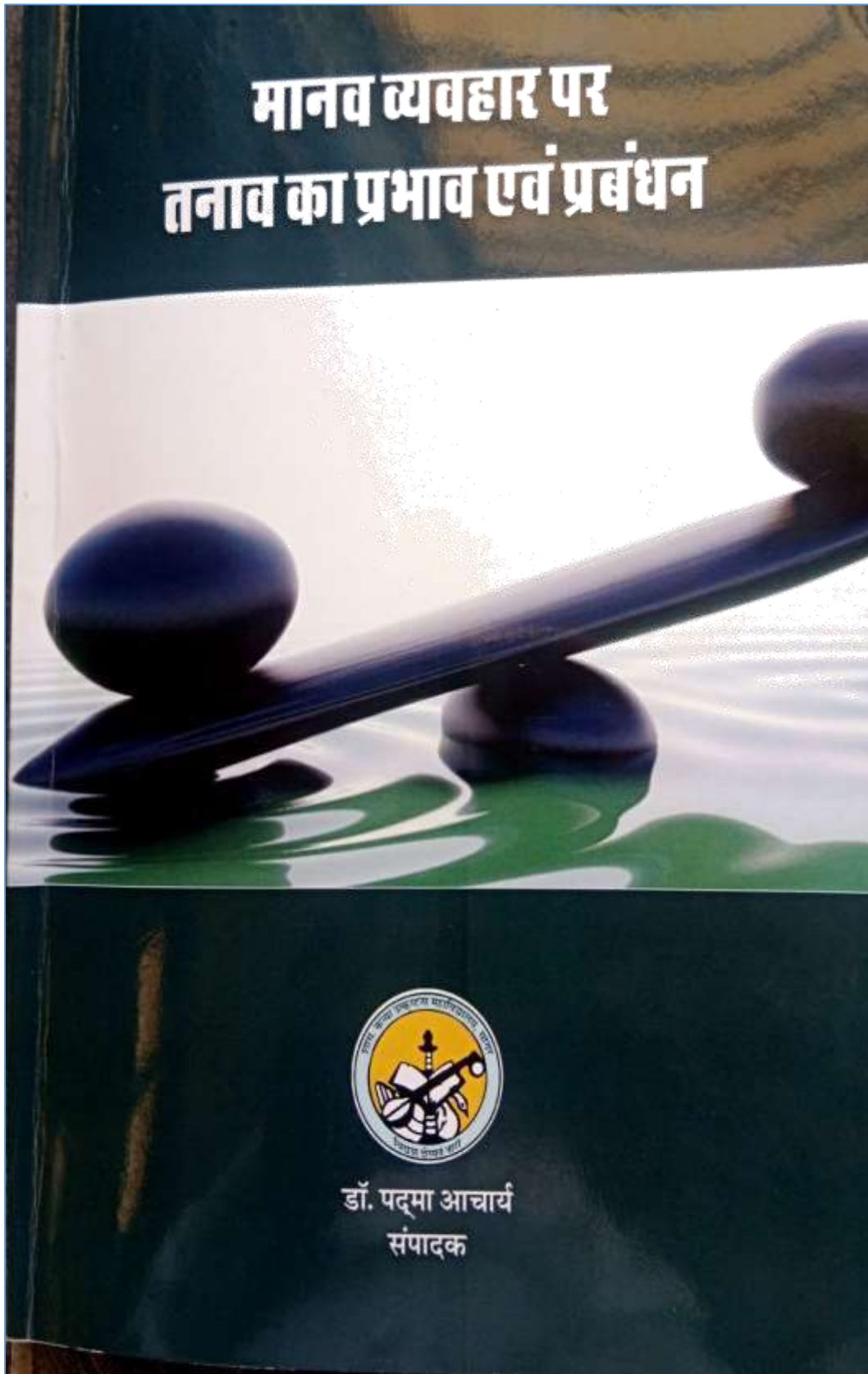
फांसी की सजा सुना दी गई। फैसले के अनुसार उन्हें 18 अप्रैल 1857 को फांसी दी जानी थी, लेकिन अंग्रेजों द्वारा मंगल पांडे को दस दिन पूर्व ही 08 अप्रैल सन् 1857 को फांसी दे दी गई।

मंगल पांडे की शहादत की खबर फैलते ही अंग्रेजों के खिलाफ जगह-जगह संघर्ष भड़क उठा। हालांकि अंग्रेज इसे काबू करने में कामयाब रहे, लेकिन मंगल पांडे द्वारा लगाई गई यह चिंगारी की आजादी की लड़ाई का मूल बीज साबित हुई। यह विद्रोह ही भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था, जिसमें सिर्फ मजदूर एवं अन्य सभी समान लोग शामिल हुए। इस विद्रोह के बाद भारत पर राज्य करने का अंग्रेजों का सपना कमजोर होता साबित हुआ।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई—जन्म काशी में 19 नवम्बर 1835 को हुआ। इनका बचपन का नाम मनु था। विवाह (1850) गंगाधर राव से हुआ, 1851 में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई चार माह बाद पुत्र की मृत्यु हो गई। अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दस्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी। परन्तु ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दस्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया। 27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दस्तक पुत्र दामोदर राव को अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंग्रेजी राज्य से मिलाने की घोषणा कर दी। लक्ष्मीबाई ने कहा मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी। 07 मार्च 1854 को झांसी पर अंग्रेजों का अधिकार हुआ झांसी में रानी ने पेंशन स्वीकृत कर दी। अंग्रेजों की राज्य हड़पनीति से उत्तर भारत के नवाब और राजा असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भड़क उठी, रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई। हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगल जीतन महल, बहादुर शाह, नाना साहब, राजा मर्दन सिंह और तात्या टोपे आदि ने महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे। रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झांसी को सुरक्षा की ओर अपनी छोटी अंत में अंग्रेजों ने रानी का पीछा किया रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया, अंत में वीरगति प्राप्त हुआ।

जवाहर लाल नेहरू—जन्म 14 नवम्बर 1889 इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम मोती लाल नेहरू और माता स्वरूपरानी था। अपनी स्कूली शिक्षा हैरो और कॉलेज की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज लंदन से पूरी की थी। गांधी जी से प्रभावित होकर 1912 में कांग्रेस से जुड़े 1920 को प्रतापगढ़ के पहले किसान मोर्चे को संगठित करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। 1928 में लखनऊ में साइमन् कमिशन के विरोध में नेहरू घायल हुये, 1930 नमक आंदोलन में गिरफ्तार हुए उन्होंने 06 माह जेल

**SERIAL NO.-2 :Book Chapter: Dr Aradhana Shrivastava: Corona Virus
evumMansikTanav P.N. 46. 2021.**



Cont.....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

संपादक : डॉ. पद्मा आचार्य

ISBN : 978-81-949767-1-4

खेबीनार में प्राप्त शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

पियर रिव्यू टीम :

1. डॉ. आनंद तिवारी
2. डॉ. नवीन गिडियन
3. डॉ. प्रतिमा खरे
3. डॉ. भावना यादव

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2021

संस्करण : प्रथम

सर्वाधिकार : शासकीय स्वशासी कन्या उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, म.प्र.

प्रकाशक : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मो. 9039390856

अक्षर संयोजन एवं प्रिंटिंग : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

कोरोना वायरस एवं मानसिक तनाव

डॉ. आराधना श्रीवास
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान
पासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह म.प्र.

भागती दौड़ती जिंदगी में अचानक लगे इस ब्रेक और कोरोना वायरस के डर ने लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। कोरोना की लड़ाई अभी जारी है। जिसका सामना हमें करना पड़ रहा है। इस लड़ाई के बीच कई ऐसी चुनौतियाँ हैं जो शारीरिक एवं मानसिक रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। इस दौरान कई लोगों को तनाव की शिकायतें हो रही हैं। कोरोना न्यूज ने जिन्दगी को जैसे थाम सा दिया है जो अब धीरे-धीरे पटरी पर आ रही है। लेकिन इस दौरान महामारी से पहले जिन्हें कभी मानसिक समस्याएँ नहीं हुई थी, उन्हें भी तनाव और चिंता होने लगी है और अगर इसके साथ सही से समायोजन नहीं किया गया, तो मानसिक स्वास्थ्य एक नये संकट का रूप ले सकता है।

कोरोना वायरस ने दुनिया के करोड़ों लोगों की दिनचर्या को बदलकर रख दिया है। कोविड-19 की वजह से लोगों को अधिकांश समय घर में ही कैद रहकर गुजारना पड़ रहा है। स्कूल, कॉलेज, बिजनेस का काम घरों से ही होने लगा है। बाहर कम निकलने से मानसिक तनाव बढ़ा है तथा कोरोना वायरस की खबरों ने भी मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाला है। इस वजह से लोगों को तनाव चिंता और घबराहट की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लोगों में तनाव बढ़ने की तीन वजह हैं। एक तो कोरोना वायरस से संक्रमित होने का डर, दूसरा नौकरी और कारोबार को लेकर अनिश्चितता और तीसरा लॉकडाउन के समय आने वाला अकेलापन।

कोविड-19 महामारी के प्रभाव से दुनिया भर की अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर हो रहा है जिसके कारण कई लोगों के रोजगार छिनने का खतरा मंडरा रहा है। इसका सीधा असर पारिवारिक तनाव और मानसिक परेशानी के रूप में सामने आ रहा है। इस कोरोना वायरस के चलते लोग काफी निराश हो गये हैं लेकिन इस कठिन दौर में बहुत से ऐसे उपाय हैं जिन्हें अपना कर लोग इस समस्या से निपट सकते हैं।

डॉ. रतनपाल सिंह बनहारा 2020 इन्होंने बतलाया है कि कोरोना वायरस को लेकर सजग रहना बहुत आवश्यक है। लोग जब घर से बाहर जाते हैं तो उन सभी को संक्रमण का डर रहता है यदि उनको चिंता है तो वह उचित रूप से मास्क लगायें, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें, उचित दूरी बनायें। यदि व्यक्ति की चिंता इतनी है कि सांस लेने में भी तकलीफ होने लगे तो कहीं ना कहीं यह चिंता जरूरत से ज्यादा है तो व्यक्ति को एंजाइटी के लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

डॉ. हेमंत पाणीग्रही के अनुसार संपूर्ण स्वास्थ्य के लिये मानसिक स्वास्थ्य भी आवश्यक है जिसके लिये आपको योगा प्राणायाम करना चाहिये।

डॉ. अशोक कुमार शर्मा 2020 इन्होंने बताया है कि कोविड-19 ने ग्लोबल कैपिसिटी को चैलेंज कर दिया है। यह पूरे विश्व के लिये चैलेंज हो गया है। कोविड को

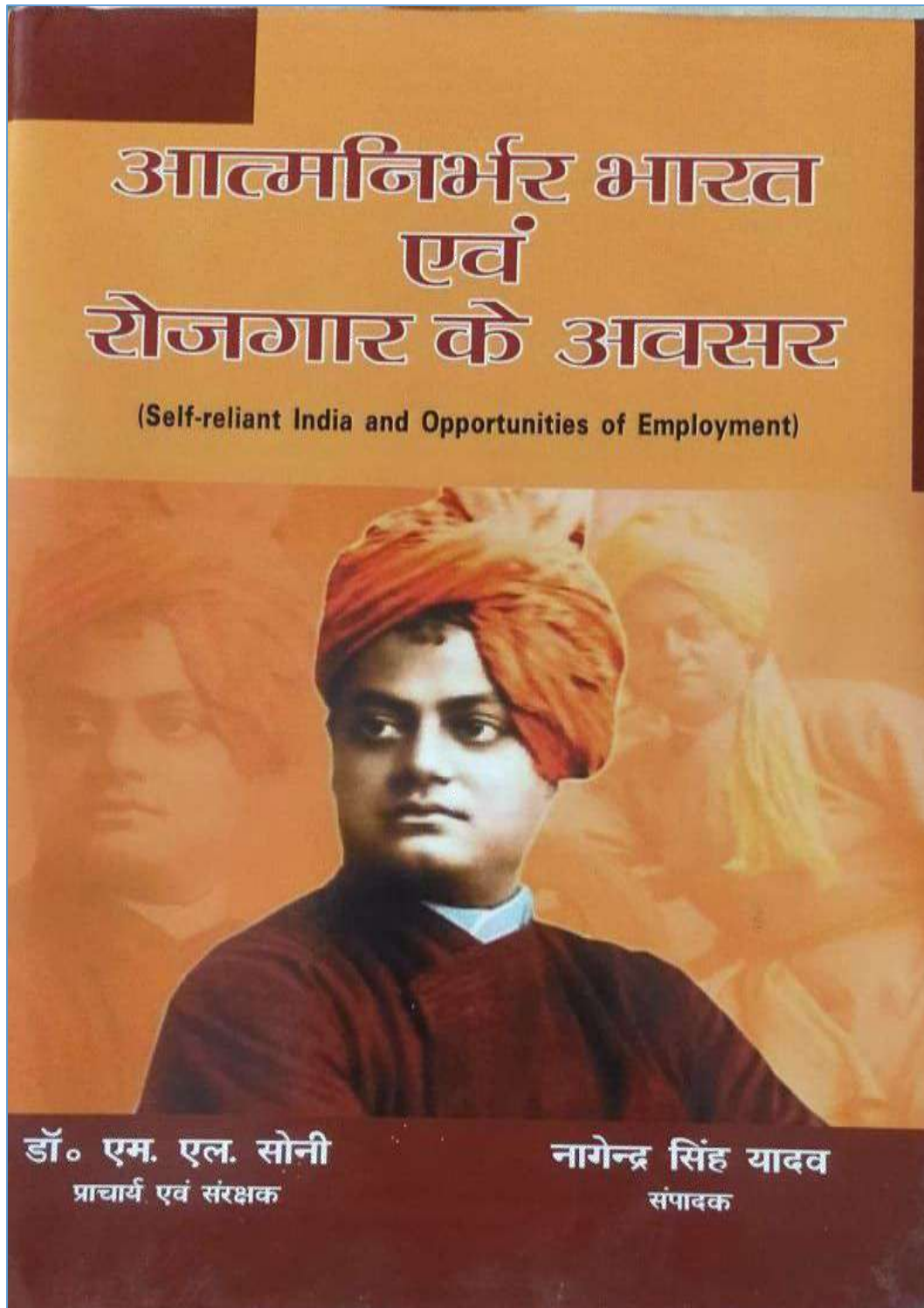
Cont....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

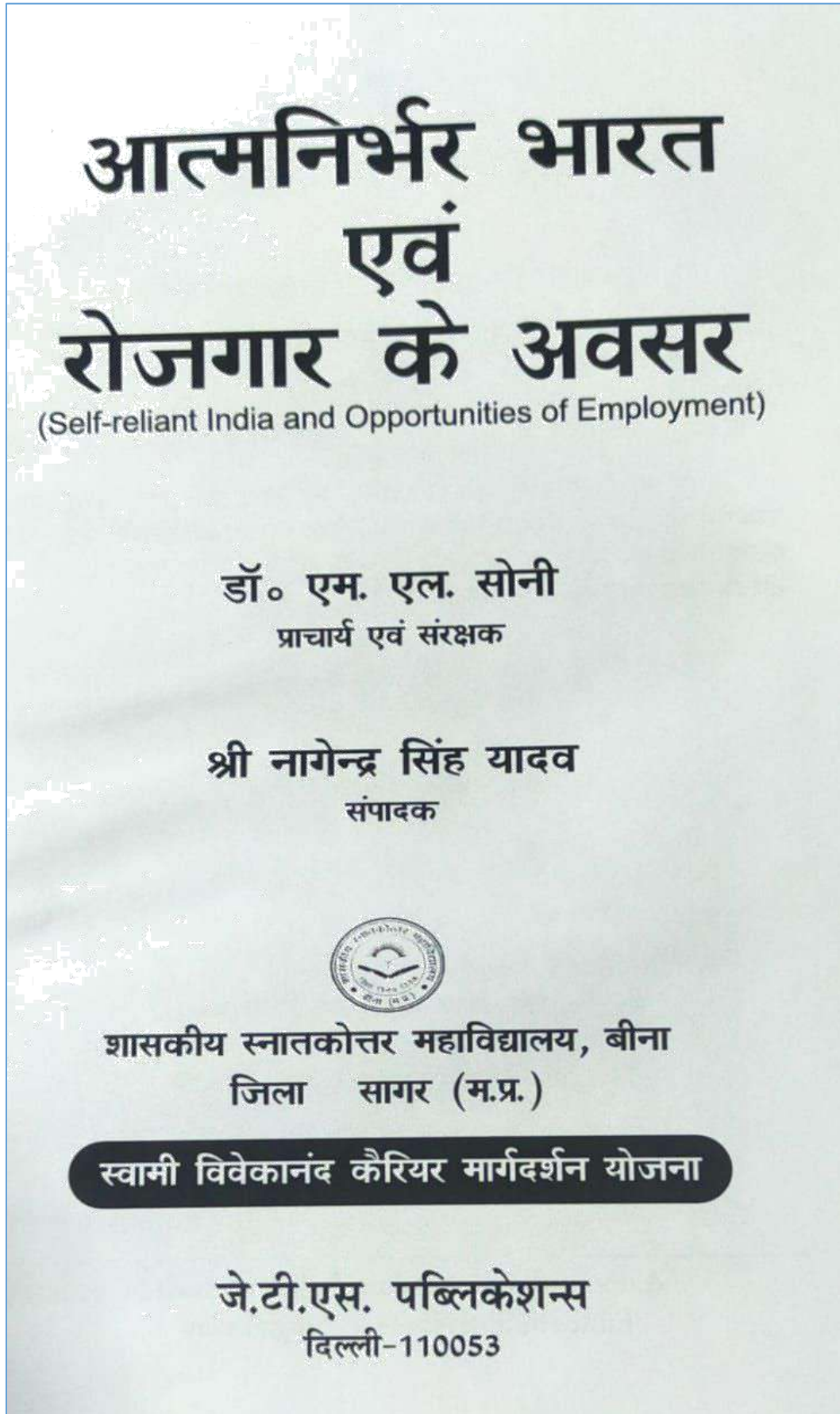
अनुक्रम

1	तनाव प्रबंधन एवं ध्यान	डॉ. दुर्गेश शांडिल्य	1
2	कोविड-19 के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन	डॉ. पद्मा आचार्य	5
3	शहरी एवं ग्रामीण किशोरो में चिंता तथा कुंठा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन (खंडवा जिले के विशेष संदर्भ में)	डॉ. जयश्री बाधम	9
4	तनाव प्रबंधन में साहित्य की उपादेयता	डॉ. ओ.पी. शर्मा डॉ. एस.एन. शर्मा	12
5	आधुनिक जीवन शैली में तनाव और उसका प्रबंधन	डॉ. ए. के. जैन	17
6	युवा तनाव – एक सामाजिक समस्या का अध्ययन	डॉ. संजय खरे	22
7	विद्यार्थियों में उत्पन्न तनाव : कारण एवं समाधान	हंसा मीना डॉ. हेमा कुमारी महर	27
8	कोविड-19 : तनाव, कारण एवं समाधान	डॉ. भावना यादव	31
9	युवाओं में बढ़ता तनाव एक प्रबल समस्या	श्रीमती कृष्णा शर्मा	34
10	शारीरिक – मानसिक स्वास्थ्य पर तनाव का प्रभाव	पूजा सोनकर डॉ. नंदा गुरवारा	36
11	आत्महत्या का उत्प्रेरक कारक: तनाव	डॉ. एस. डी. राठौर डॉ. ए. आर. खान डॉ. ओ. पी. शर्मा	40
12	मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन	डॉ. नीलम सिंह	42
13	कोरोना वायरस एवं मानसिक तनाव	डॉ. आराधना श्रीवास	46
14	कार्यशील महिलायें – परिवार एवं समय प्रबंधन	डॉ. निधि ठाकुर	49

SERIAL NO.—3 : Book Chapter: Dr. Aslam Khan: Corona Prabhavit
arthvyawastha me Jaan Fookta Atma Nirbhar Bharat Abhiyaan : Ek
Aarthik Vishleshan P.N. 78.



Cont....



Cont.....

12. आत्मनिर्भर भारत : देश में रोजगार की असीम सम्भावनाएं डॉ. कृष्णा राय चौहान	118
13. कोरोना वायरस का विद्यार्थी जीवन पर प्रभाव धर्मेन्द्र सिंह	126
14. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में रोजगार की स्थिति एवं संभावनाएँ डॉ० कवलजीत कौर, डॉ० कल्पना जोशी	134
15. भारत में महिला श्रम की भागीदारी डॉ. ममताधाकड़	141
16. रोजगारमूलक शिक्षा डॉ. शैलेश कुमार पाण्डेय	148
17. वर्तमान परिदृश्य में रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता विनय कुमार	155
18. पर्यावरण एवं औद्योगीकरण के प्रभाव से कलुषित होता जनमानस आशीष राठौर	161
19. गृह विज्ञान में रोजगार के अवसर डॉ प्रियंका गेहलोत	171
20. रोजगार के लिए सरकार की विभिन्न योजनाएँ: मध्यप्रदेश के संदर्भ में डॉ. एस.बी. विश्वकर्मा, कु. आकृति खरे	177
21. आत्मनिर्भर भारत में कौशल विकास की भूमिका रीना राठौर	182
22. Vermicomposting: The Use of Earthworms to Convert Organic Waste into Natural Fertilizer at Low Cost Dr. Ritu Sharma	191
23. Aatmanirbhar Bharat and Women's Economic Empowerment Dr. Reema Sharma	204
24. The history of women's work and wages and how it has created success for us all	216

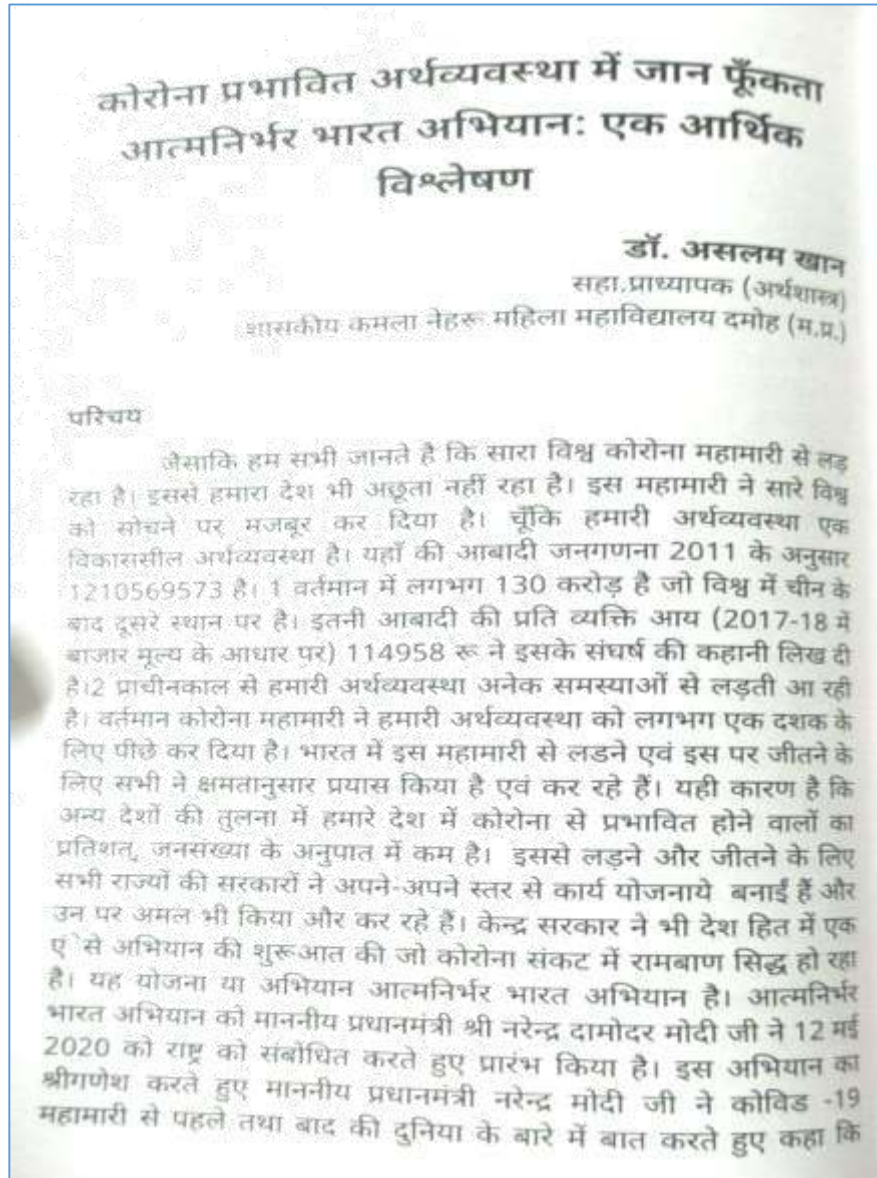
Cont....

12. आत्मनिर्भर भारत : देश में रोजगार की असीम सम्भावनाएँ डॉ. कृष्णा राय चौहान	118
13. कोरोना वायरस का विद्यार्थी जीवन पर प्रभाव धर्मेन्द्र सिंह	126
14. भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में रोजगार की स्थिति एवं संभावनाएँ डॉ० कवलजीत कौर, डॉ० कल्पना जोशी	134
15. भारत में महिला श्रम की भागीदारी डॉ. ममताधाकड़	141
16. रोजगारमूलक शिक्षा डॉ. शैलेश कुमार पाण्डेय	148
17. वर्तमान परिदृश्य में रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता विनय कुमार	155
18. पर्यावरण एवं औद्योगीकरण के प्रभाव से कलुषित होता जनमानस आशीष राठौर	161
19. गृह विज्ञान में रोजगार के अवसर डॉ प्रियंका गेहलोत	171
20. रोजगार के लिए सरकार की विभिन्न योजनाएँ: मध्यप्रदेश के संदर्भ में डॉ. एस.बी. विश्वकर्मा, कु. आकृति खरे	177
21. आत्मनिर्भर भारत में कौशल विकास की भूमिका रीना राठौर	182
22. Vermicomposting: The Use of Earthworms to Convert Organic Waste into Natural Fertilizer at Low Cost Dr. Ritu Sharma	191
23. Aatmanirbhar Bharat and Women's Economic Empowerment Dr. Reema Sharma	204
24. The history of women's work and wages and how it has created success for us all	216

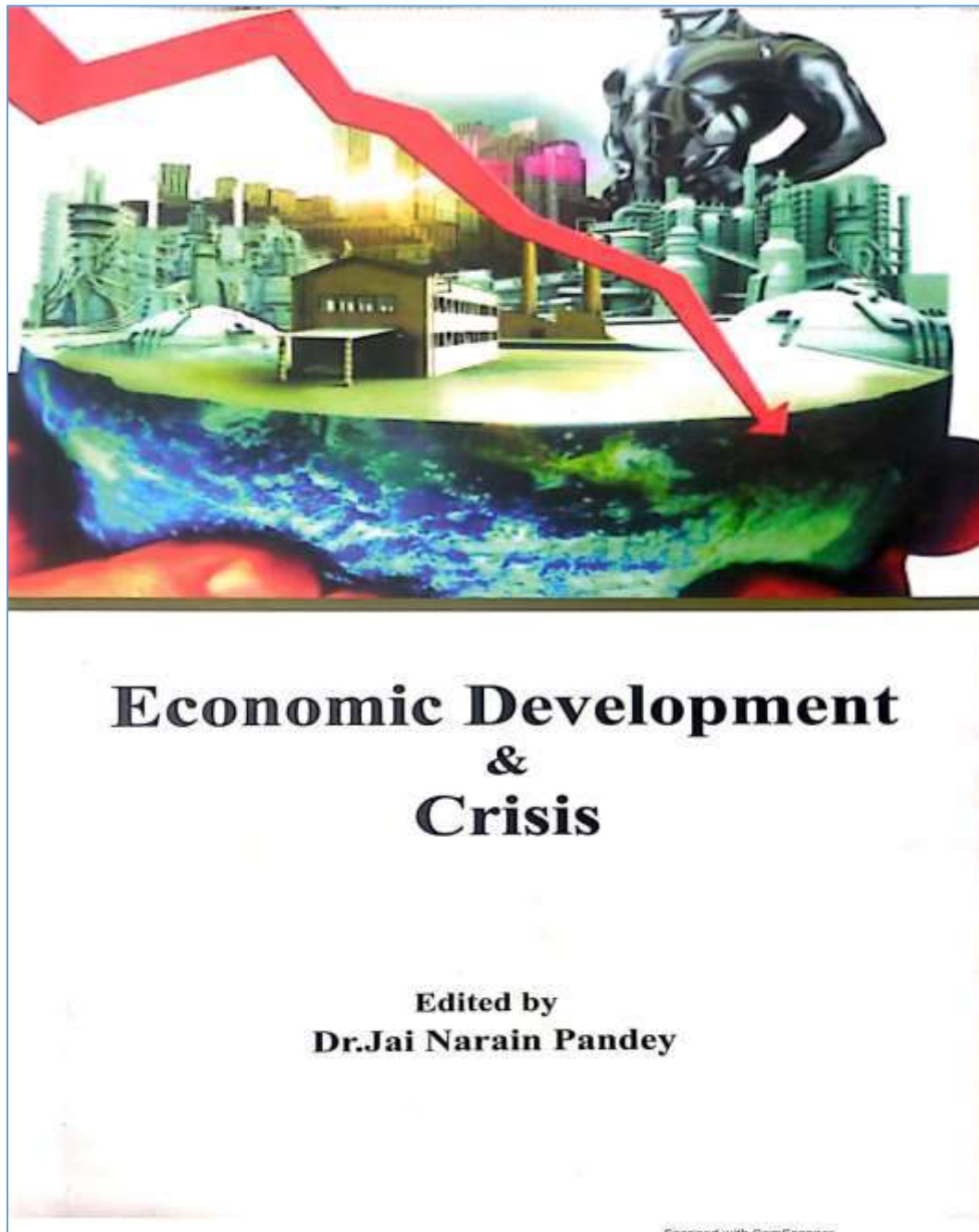
Cont.....

Payal Sharma	224
25. Self Dependency in Higher Education Sunil ojha	230
26. Scope of E-Commerce in Agribusiness in India Dr.Gajendra Pathak	236
27. Changing Dimensions of Employment during COVID-19 Pandemic Dr. Kritika, Sunita Devi	242
28. Digital Tools & Specific Employment Demand Escalation In Pandemic With Reference To India Ms. P.S.Chandel	247
29. During The Year of Undergraduate Students of Arts Stream : At The Time of Admission, During The Study And At The End of The Year The Study of Vocational Aspirations Dr. Jayantilal Rathod	255
30. The Role of Medicinal Plant Cultivation in Creating Employment Opportunities in India Shiv Mangal	

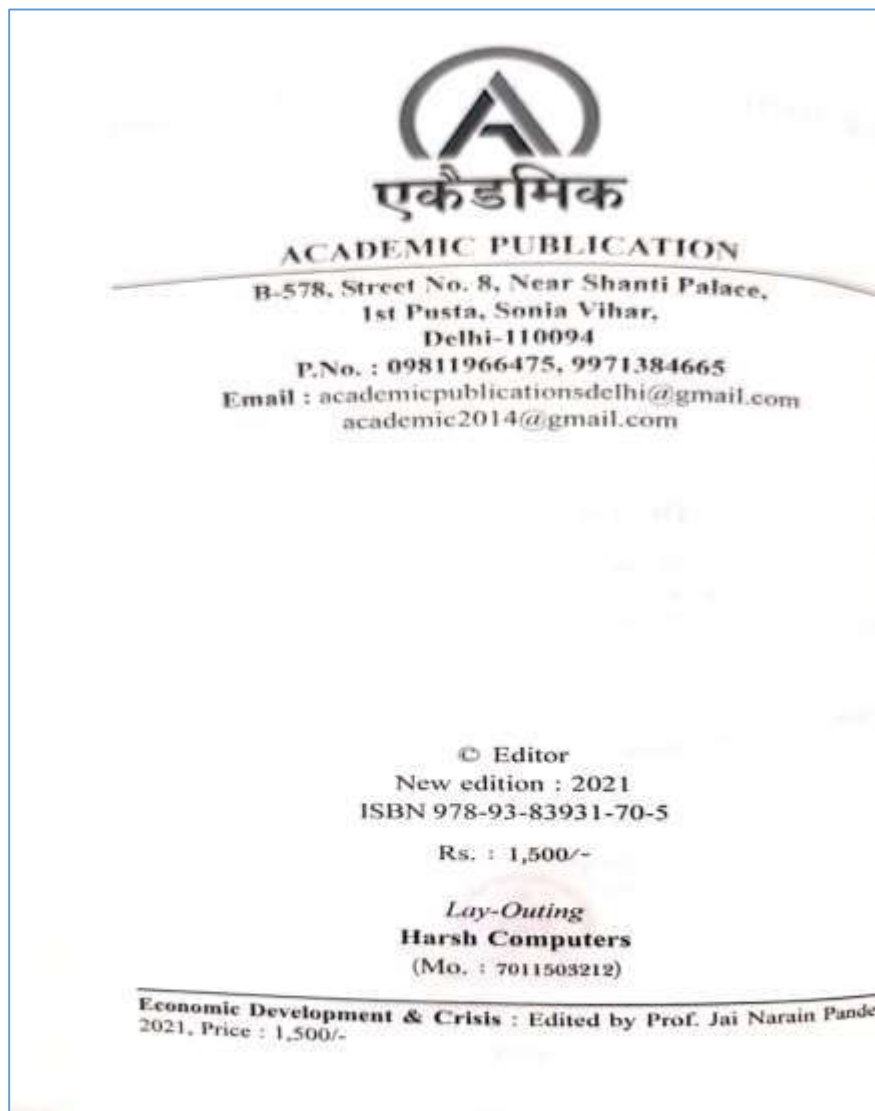
Cont.....



SERIAL NO.- 4 :Book Chapter: Dr. Aslam Khan: Kuposhan ki aag se khaakhota bachpan PN. 262-275.



Cont....



Cont....

Contents अनुक्रमणिका

S. No.	Topic	Author	Page No.
i.	Message	Prof. Mohd. Muzammil	iii
ii.	Message	Dr. S. K. Tripathi	vii
iii.	From Editor's Desk	Dr. Jai Narain Pandey	ix
1.	Economic Development Model	Dr. Jai Narain Pandey	1
2.	Covid 2019	Lt. Col. Dr. Walmik Yegade	17
3.	The Crude Oil Price Sensitivity and Economic activities- A Case study of Nigeria (Ethiopia)	Dr. Bhupendra Kumar	29
4.	Health and Development with Reference to India	Dr. R.Y. Mahore	43
5.	Economic Development With Data & Technology (Singapore)	Shashank Tripathi	57
	Higher Education in the Face of Covid-19 in the Ugandan Context: Implications for Sustainable Development Goals in the Developing Nation (Uganda)	Dr. David Ssekamatte	64
	Role of Agriculture in Economic Development of India	Dr. Janrdan Bhagat Dr. Ramesh Kumar Jaiswal	72

Scanned with CamScanner

Cont....

8. Covid-19 Crisis and its impact on Employment in India *Dr. Vinod Sen*
9. Efficacy of Practicing Spiritual Psychological Interventions, and Mindfulness Meditation in COVID-19 Pandemic *Dr. Preeti Pandey*
10. SOCIO- Economic Impact of 2019-20 Corona Virus Pandemic in India (Special Reference to Chhattisgarh) *Dr. V.K. Sharma
Shraddha Das*
11. Impact Assessment of Cluster Front Line Demonstration on Mustard Crop in District Patan (Gujarat) *Upesh Kumar*
12. Development of Scheduled Tribe Population in Madhya Pradesh: A Comparative Analysis *Dharam Das Vishwakarma*
13. Covid-19 Problems and Opportunities for India *Dr. P. U. Athawale*
14. Relationship Between Trade Openness, Financial Development and Economic Growth of Nepal: A Production Function Approach *Shreejal Gharti
Chettri (Nepal)*
15. An Overview of Challenges, Theory and Policy Related To International Economic Growth and Crisis *Dillip Vithal Badave*
16. Impact of Corona Virus on Education *Dr. Rama J Shah*
17. Development and Environment *Dr. Madhuri Gupta*
18. Post Covid-19 Higher Education: Opportunities and Challenges *Dr. Samit Laxman Mahore*
19. Covid-19 and Its Impact on Education Odisha *Samir Kumar Das*

Scanned with CamScanner

Cont....

20.	Reverse Migration: Impact on Rural Economy	<i>Dr. Devashish Halder</i>	187
21.	Global Economic Crisis and Key Strategies	<i>Dr. Namrata Shrivastava</i>	193
22.	Smart Public Services	<i>Umesh Kumar Pandey</i>	
		<i>Dr. Snehlata Barde</i>	204
23.	Impact of Covid-19 on Unorganized Sector: A Big Socio- Economic Challenge in Bihar	<i>Dr. Nagma Shadab</i>	211
24.	Regional Imbalances in India	<i>Dr. Anita Dikshit</i>	213
25.	कोरोना-काल में आर्थिक-सामाजिक भूचाल	<i>डॉ. चन्द्र कुमार जैन</i>	223
26.	भूमंडलीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	<i>डॉ. रश्मिप्रभा फरे</i>	
		<i>प्रो. विकास वर्मा</i>	228
27.	कोविड-19: पर्यावरण के लिये संजीवनी	<i>डॉ. अंजू सिंह</i>	235
28.	वक्सर अनुमंडल में स्वास्थ्य कार्यक्रमों का जनसंख्या नियंत्रण का "कृषि और विकास" पर प्रभाव	<i>रवि शंकर राम</i>	239
29.	बिहार में कोविड-19 और उसका शिक्षा पर प्रभाव: "एक भौगोलिक अध्ययन।"	<i>डॉ. नागेंद्र दास</i>	241
30.	कोविड-19 का शिक्षा पर प्रभाव	<i>प्रा. डॉ. जे. एस. हटवार</i>	247
31.	वैश्वीकरण एवं औद्योगिक विकास का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	<i>विनोद नागले</i>	253
32.	कुपोषण की आग से खाक होता बचपन	<i>डॉ. असलम खॉं</i>	261
33.	वैश्वीकरण और उच्च शिक्षा चुनौतियाँ व सम्भावनाएँ	<i>डॉ. कृष्णा सोलंकी</i>	276
34.	महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना का ग्रामीण विकास में योगदान	<i>देवशरण सिंह</i>	280
35.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना कोविड-19 का प्रभाव	<i>डॉ. स्निग्धा भट्ट</i>	
		<i>डॉ. बलराम साहु</i>	284
36.	"कोविड-19 एवं असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के रोजगार पर प्रभाव"	<i>गुलशेर अहमद</i>	
		<i>डॉ. आर.बी.एस. चौहान</i>	
		<i>श्रीमति रचना मिश्रा</i>	289

Cont....

- | | |
|--|--|
| 37. विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 महामारी में निहित विविध आयाम | डॉ. नियाज अहमद अंसारी
डॉ. गुजाम मोहइयुद्दीन |
| 38. कृषि और विकास | डॉ. क्रेसेन्सिया टोणो
सुशील कुमार टोणो |
| 39. कोविड-19 और उसका रोजगार पर प्रभाव | मिनि अरोरा |
| 40. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण | डॉ. (श्रीमती) रेणुका शर्मा |
| 41. कोरोना महामारी के दौरान उत्पन्न मंदी का कृषि क्षेत्र पर प्रभाव: एक स्वतंत्र आलेख | डॉ. कल्पना गुहा |
| 42. कोरोना वायरस का रोजगार पर प्रभाव (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) | डॉ. जी.डी.एस. बग्गा |
| 43. कृषि एवं आर्थिक विकास | डॉ. प्रवीण कुमार |
| 44. कोविड-19 और उसका शिक्षा एवं रोजगार पर प्रभाव | डॉ. रंजना नीलिमा कच्छप |
| 45. कोरोना वायरस का प्रकोप | डॉ. पूर्णिमा साहू |
| 46. प्रवासीय मजदूरों पर कोविड का सामाजिक आर्थिक प्रभाव | डॉ. अनीता मेश्राम |
| 47. कोविड-19 का शिक्षा पर प्रभाव | डॉ. श्रीमती सविता जैन |
| 48. भारत के विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान | डॉ. सुरेंद्र गोविंदराव पोथारे |
| 49. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंदी | प्रो. रीता सिंह |
| 50. प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा एवं संरक्षण | डॉ. श्रीमती नीलम शुक्ला |

A Annexed 01 Brochure of National Webinar

B Annexed 02 Brochure of International Webinar

Cont....

कुपोषण की आग से खाक होता बचपन

डॉ. असलम खाँ

परिचय :

यह एक ऐसा चक्र है जिसकी चुंगल में बच्चे अपनी माँ के गर्भ में ही फँस जाते हैं। उनके जीवन की नियति दुनिया में जन्म लेने के पहले ही तय हो जाती है। यही नियति लिखी जाती है गरीबी और भुखमरी की स्याही से, इसका रंग स्याह, उदास होता है और स्थिति गंभीर होने पर जीवन में आशा की किरणें भी नहीं पनप पाती हैं। कुपोषण के मायने होते हैं आयु और शरीर के अनुरूप पर्याप्त शारीरिक विकास ना होना, एक स्तर के बाद यह मानसिक विकास की प्रक्रिया को भी अवरुद्ध करने लगता है। बहुत छोटे बच्चों खासतौर पर जन्म से लेकर 5 वर्ष की आयु तक कि बच्चों को भोजन के जरिए पर्याप्त पोषण आहार ना मिलने के कारण उनमें कुपोषण की समस्या जन्म ले लेती है। इसके परिणाम स्वरूप बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का अस होता है और छोटी-छोटी बीमारियाँ उनकी मृत्यु का कारण बन जाती हैं।

कुपोषण के हम निम्न रूप देख सकते हैं :

कुपोषण मुख्यतः 6 रूपों में नजर आता है जो क्रमशः है :

1 जन्म के समय कम वजन होना। 2 बचपन में वांछित विकास होना। 3 अल्प रक्तता होना।

4 विटामिन ए की कमी पाया जाना। 5 आयोडीन कमी संबंधित बीमारियाँ होना। 8 मोटापा होना

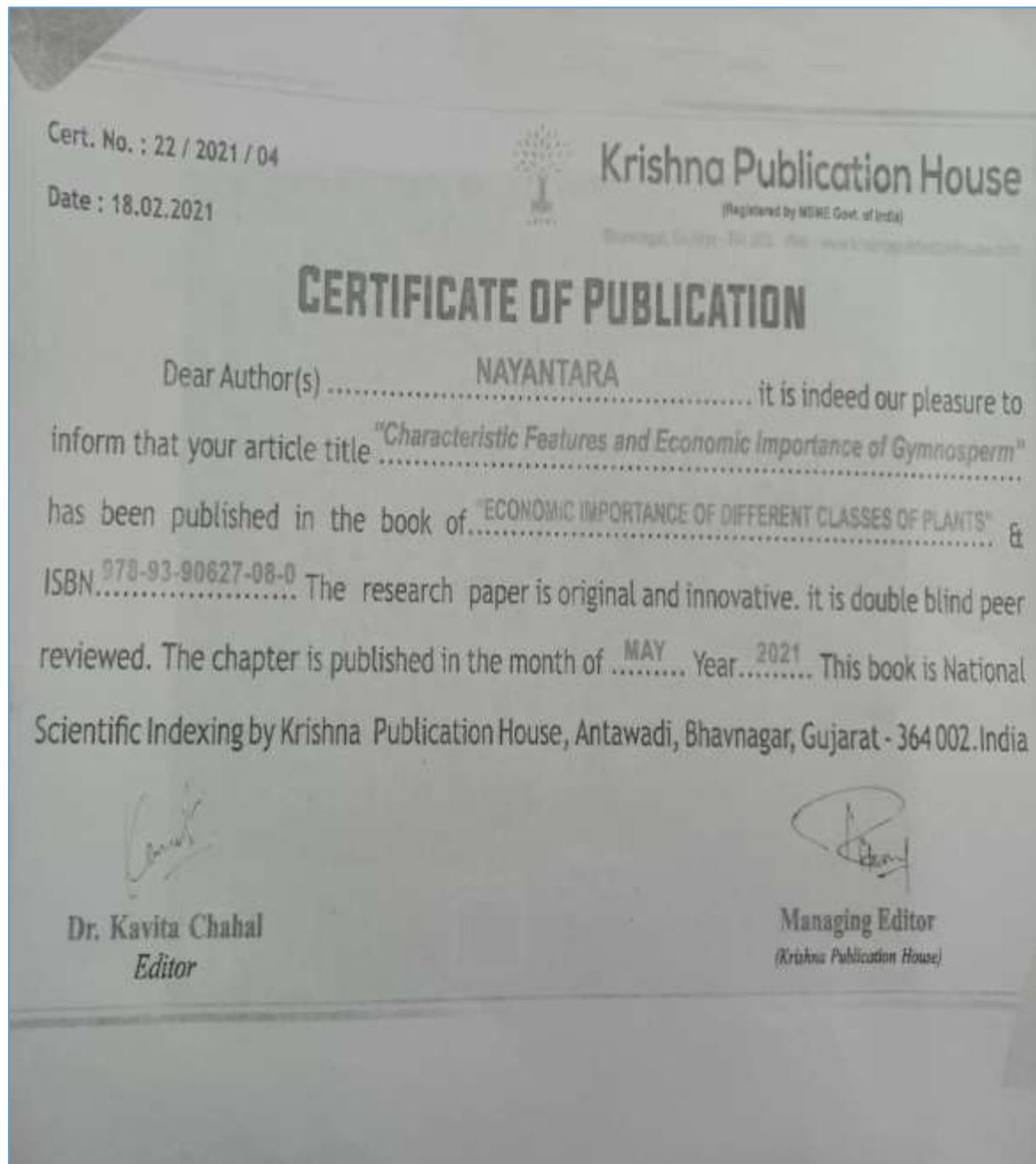
बच्चों में कुपोषण मुख्यतः दो प्रकार का होता है :

1 सूखे वाला कुपोषण 2 सूजन वाला कुपोषण

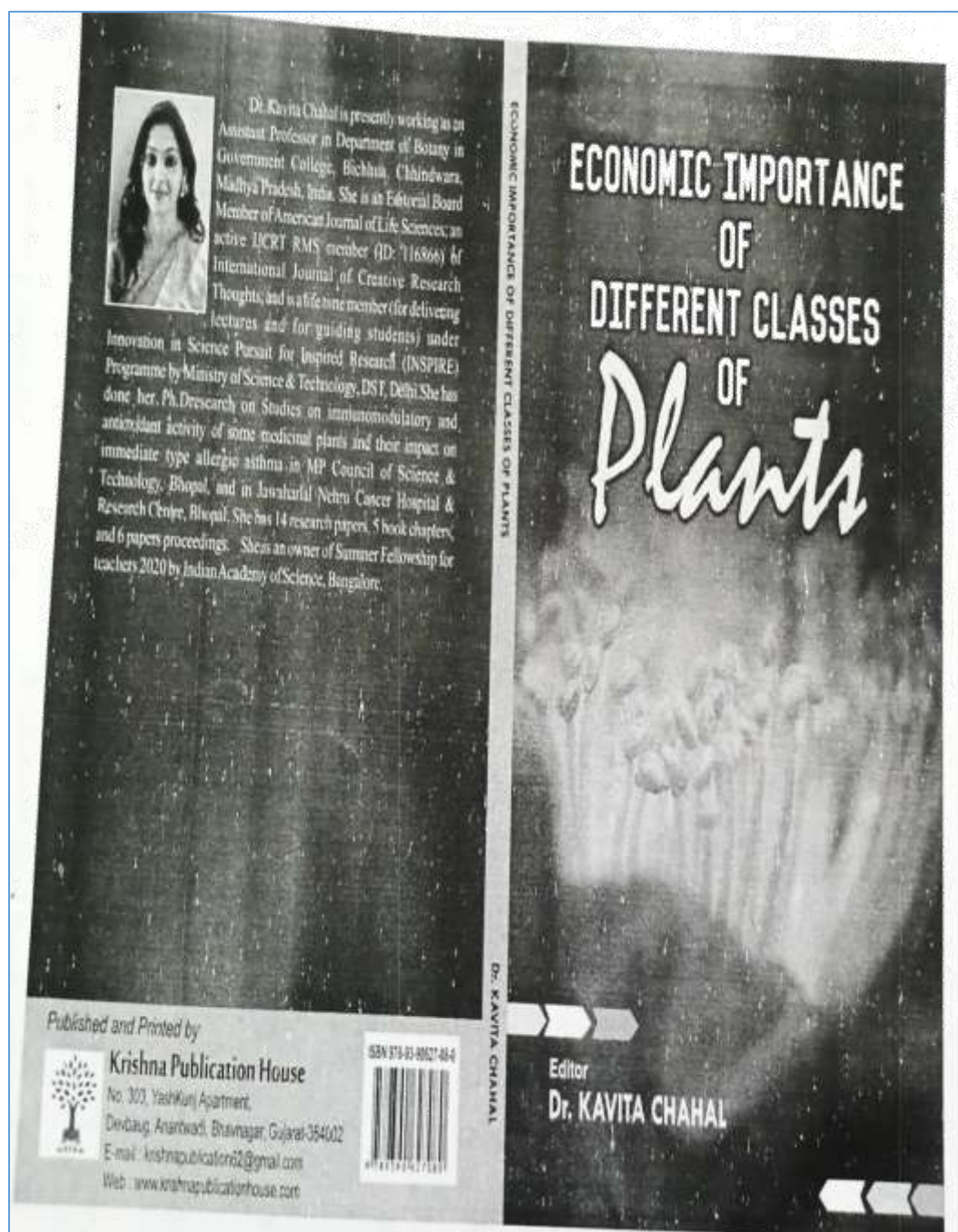
कुपोषण की पहचान हम बच्चों में निम्न लक्षण देख के कर सकते हैं :

1 शरीर की वृद्धि रुकना। 2 बच्चे की मांसपेशियाँ ढीली एवं सिकुड़ जाना। 3 बच्चे को झुर्रियाँ आना एवं पीले रंग की त्वचा होना। 4 बच्चों को हल्का चलने व काम करने में थकान महसूस होना। 5 बच्चों का मन प्रसन्न ना होना उनके मन में उत्साह की कमी होना।

SERIAL NO.—5 : Book Chapter: Nayantara: Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm 2021.



Cont....



Cont....

CONTENTS	
1. Traditional Plant-Based Medicines Against Covid 19- A Review and Perspective P. Ruban	1
2. Importance of Ascomycetes Raichur Kalyani	10
3. Medicinal Importance of Plants Sweta Prakash & Kamini Dubey	26
4. Characteristic Features and Economic Importance of Gymnosperm Nayantara	46
5. Industrial Importance of Plants Prakash Solanki & Girish Kumar Sharma	61
6. Economic Impotrance of Gymnosperm Dr. Aarti Chouhan & Dr. Rajmal Singh Rao	74
7. Economic Importance of Angiosperm Kamini Dubey & Sweta Prakash	91
8. Medicinal Importance of Plants Dr. Rita. Sangtani	104
9. Medicinal Importance of Plants : An Overview Dr. Pallavi Dixit	113
10. A Brief Introduction of the use of Plants as A Source of Medicine in Homoeopathy Dr. Tilottama B Galande	127

Cont....

Economic Importance of Different Classes of Plants - Dr. Kavita Chahal

Chapter – 4

CHARACTERISTIC FEATURES AND ECONOMIC
IMPORTANCE OF GYMNOSPERM

Nayantara

Assistant Professor, Kamla Nehru Girls College, Damoh,
Madhya Pradesh

E-mail : nainu21jan@gmail.com

Abstract

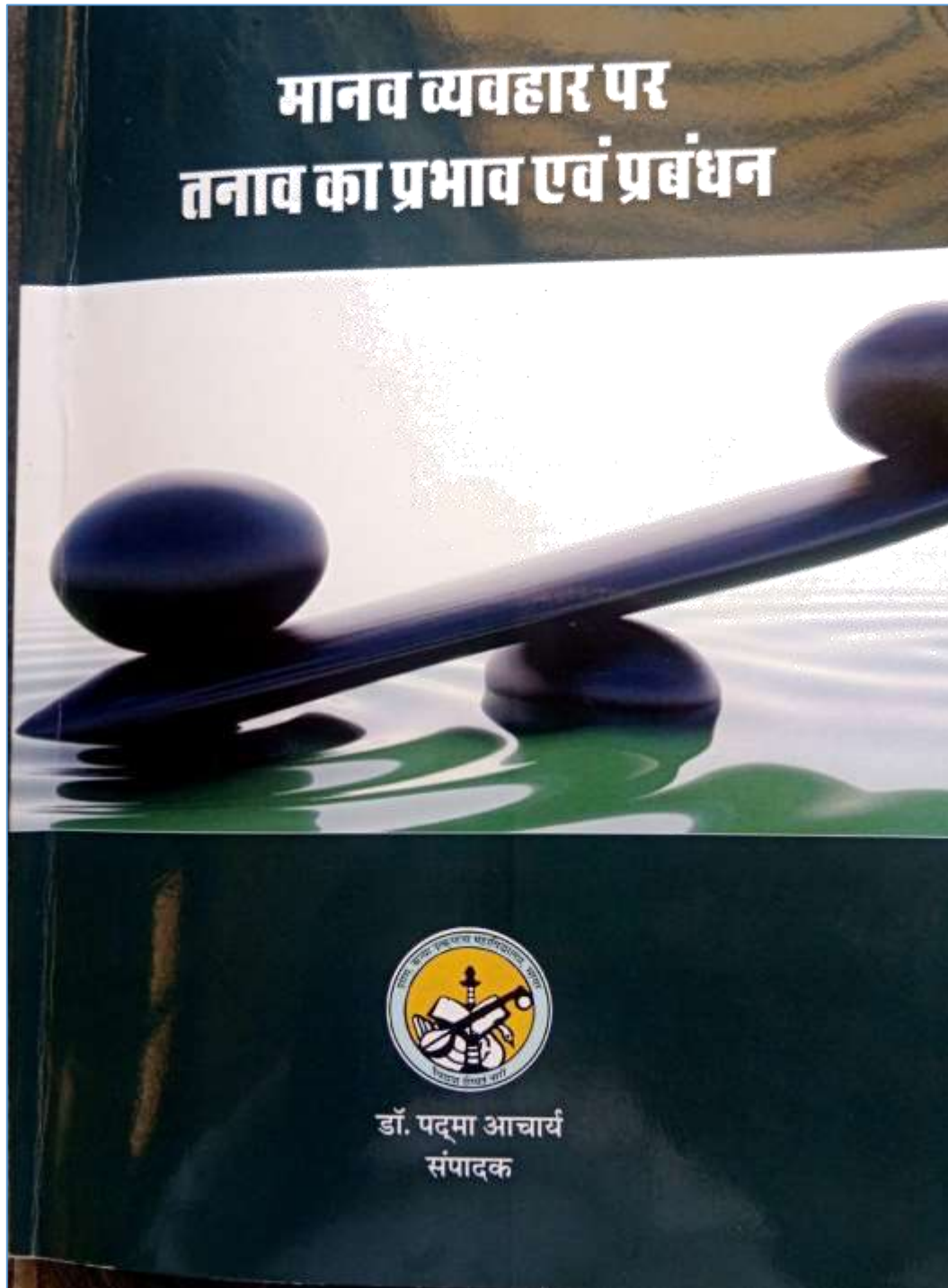
Gymnosperms are plants with a 'naked', or unprotected seed. Gymnosperms live in a variety of habitats worldwide. There are approximately 1000 species of gymnosperms alive today, in four broad divisions: cycads, ginkgos, conifers, and gnetophytes. Many gymnosperms are trees, and some are economically important as a source of timber and pulp. Gymnosperms have been numerous roles in various medicinal systems such as modern medicine, folk and traditional medicinal systems. Most gymnosperms are evergreen, woody perennials.

Keywords : Gymnosperm, species, diversity, economic importance, medicinal plants, ecological role.

Introduction :

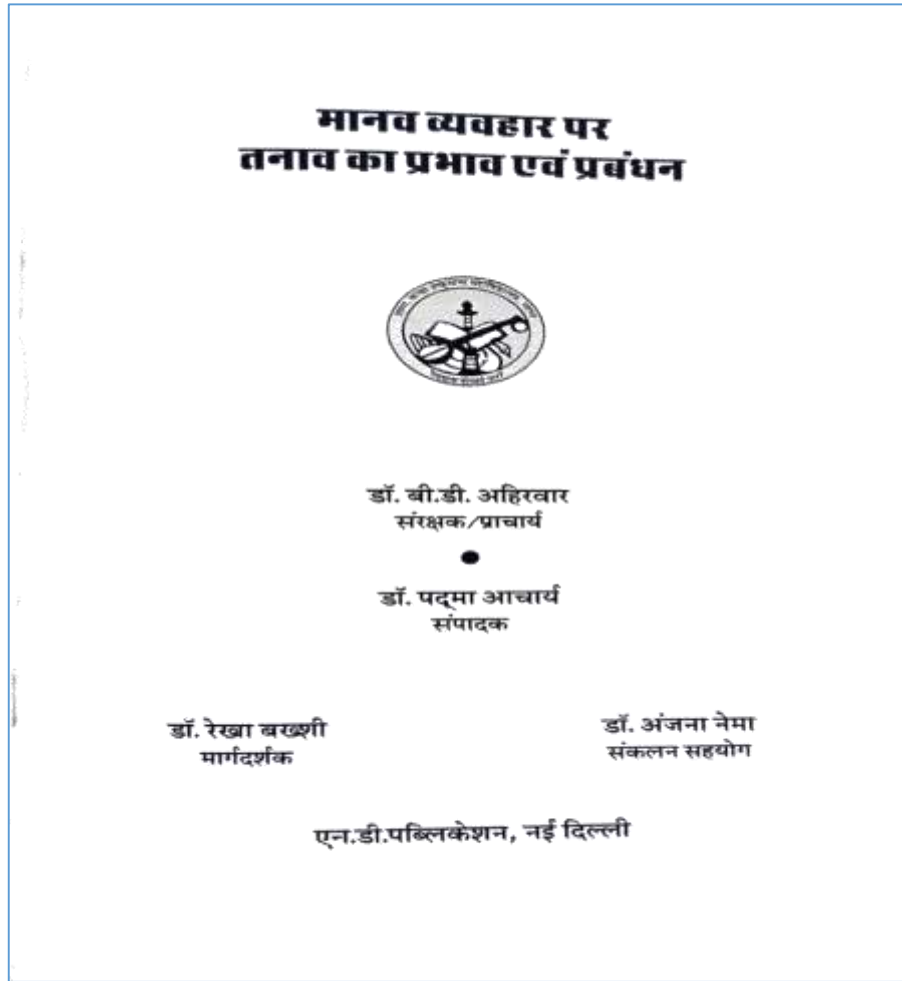
Gymnosperms are a group of plants that produce seeds that are not contained within an ovary or fruit. The seeds are open to the air and are directly fertilized by pollination "Gymnosperm", from the Greek, gymnos, "naked" and sperma, "seed", develop their seeds on the surface of scales and leaves, which often grow to form cone or stalk shapes. Term Gymnosperm was given by Theophrastus and study of Gymnosperm known as a Gymnosperology. The gymnosperm is very early known seed plants about 350 million years ago i.e. Palaeozoic era but flourished well in Mesozoic period. It has a very diversified path of history of evolution within the group. Many species grew during this period and vanished and no longer existed. Out of four modern gymnosperm commonly grouped as the Cycadales, the Ginkgoales, the Conifersles, and the Gnetales, two of them living members the Ginkgoales and the Cycadales have long fossil history and may be regarded as living fossil. Early Mesozoic which is known as the

**SERIAL NO.- 6 : Book Chapter: Smt. PreetiVerma Kishoro Me Tanav
aur uska prabandhan P.N. 55 (2021).**



85

Cont.....



Cont....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

संपादक : डॉ. पद्मा आचार्य

ISBN : 978-81-949767-1-4

वेबिनार में प्राप्त शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

पियर रिव्यू टीम :

1. डॉ. आनंद तिवारी
2. डॉ. नवीन गिडियन
3. डॉ. प्रतिमा खरे
3. डॉ. भावना यादव

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2021

संस्करण : प्रथम

सर्वाधिकार : शासकीय स्वशासी कन्या उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, म.प्र.

प्रकाशक : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मो. 9039390856

अक्षर संयोजन एवं प्रिंटिंग : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली



Cont.....

15	कोविड-19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	दीपिका पिपरदे	51
✓16	किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन	प्रीति वर्मा	55
17	आधुनिक जीवनशैली और तनाव	प्रीति उइके	57
✓18	कोविड-19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	डॉ. दिनेश कुमार पवन	59
✓19	तनाव प्रबंधन	श्रीमती सुरेखा बड़ौले	63
20	Work Place Stress and its Management	Dr. Rekha Baxy	65
21	Stress - management towards women's job in Raipur city	Saumya Mishra	70
22	Impact of Stress on Human Behaviour and its Management (Methods of Stress Management)	Dr. Nanda Gurwara	79
23	Corona Virus (Covid-19) and Stress Management	Dr. Basanti Jain	87
24	Nutrition and mental health	Dr. Anjana Nema	90
25	Modern life style and stress	Dr. Rashmi Singh	96
26	Diverse Dimensions of Tension due to Covid-19	Dr. Pratibha Shrivastava	99
27	Stress in the Perspective of Workplace	Dr. Bishnu Deo Mochi	103
28	Effect of Stress on Physical Health in childhood During Covid-19	Mrs. Madhuri Palte	106
29	Impact of stress on human behavior and management	Er. Shrikant Singh	109
30	Pandemic covid -19 stress and its management to households in Jabalpur city	Rashmi Singh	109
31	Teas to relieve and calm stress and anxiety while working from home	Dr. Abha Tiwari	115
		Dr. Madhuka Shrivastava	123
		Laloraya	

Cont....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन

प्रीति वर्मा
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह

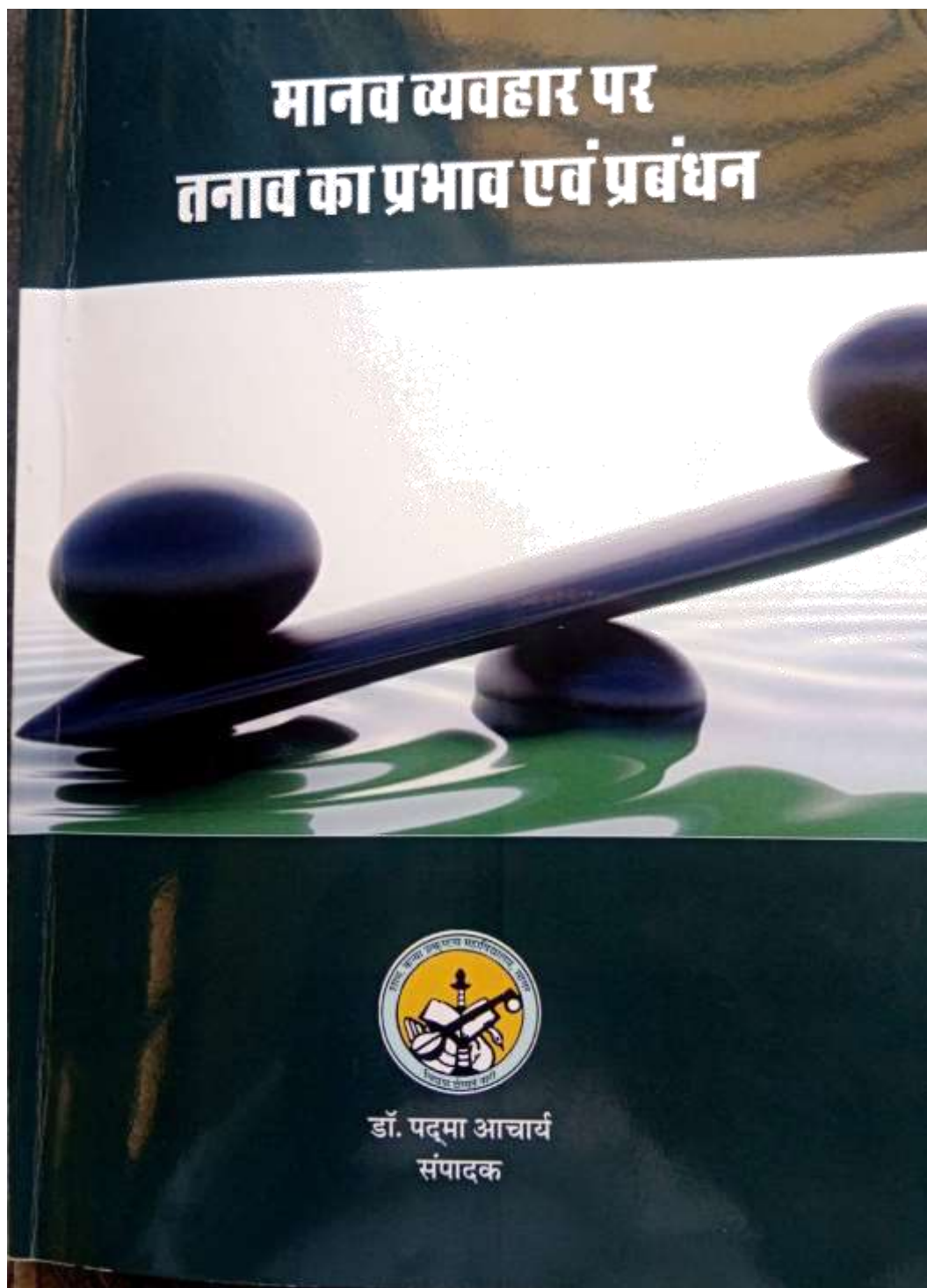
आजकल की भाग दौड़ भरी जिंदगी में लोगों का जीवन तनावपूर्ण होता जा रहा है व्यक्ति अपनी जिंदगी जीने के बजाय अपनी जरूरतों को पूरा करने के पीछे भाग रहे हैं और जब वह जरूरतें पूरी नहीं होती तो वह तनाव ग्रसित हो जाते हैं। आज हर आयु वर्ग तनाव का सामना कर रहा है — बच्चों में अपने स्कूलों में अच्छे अंक लाने का तनाव, वयस्को में अपने परिवार की सुख सुविधाओं को पूरा करने का तनाव और वृद्धावस्था में अकेलापन दूर करने का तनाव होता है। इन सभी आयु वर्ग में से सबसे ज्यादा किशोर वर्ग तनाव का सामना कर रहे हैं, वह एक तो अपने शारीरिक बदलाव को समझने में परेशान रहते हैं एवं उसके बाद परिवार द्वारा लगाई गई रोक टोक से उन्हें लगता है कि उनसे उनकी आजादी छीनी जा रही है जिससे किशोर अधिक तनाव में आ जाते हैं। इसके साथ ही साथ उन्हें अपना कैरियर संभालने का भी तनाव रहता है, जिसके कारण उनके अंदर अंतर्द्वंद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। किशोरावस्था एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें बहुत अधिक उथल पुथल पाया जाता है। मनोवैज्ञानिक दशा के कारण लड़के लड़कियां विपरीत यौन में रुचि लेने लगते हैं। इस आयु के किशोरों में यौन संबंधी व्यवहारों की रोकथाम बहुत कम हो पाती है, किशोरावस्था में अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं जो उसके व्यवसाय समायोजन, यौन आदि से संबंधित होती हैं जो उसके व्यक्तित्व विकास को भी प्रभावित करती हैं और इन सब में समायोजन होने के कारण किशोरों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

किशोरों में तनाव का कारण

किशोरों में तनाव का प्रमुख कारण उनके अंदर का अंतर्द्वंद होता है जो अपने परिवार से साझा नहीं कर सकते हैं। वह अपने शरीर में हो रहे बदलाव के बारे में अपने माता पिता से बात करने में हिचकिचाते हैं एवं घर के बाहर अपने दोस्तों से पूछते हैं जिसके कारण वह कभी कभी गलत आदतों में पड़ जाते हैं एवं माता-पिता द्वारा रोक टोक उन्हें पसंद नहीं आती एवं ज्यादा आक्रामक व्यवहार अपना लेते हैं। अपने भविष्य को लेकर चिंता एवं अपने माता-पिता की आशाओं पर खरा उतरने की चिंता भी किशोरों को तनाव से ग्रसित कर सकती है। किशोर का सपना कुछ और बनने का होता है परंतु माता-पिता अपनी इच्छानुसार विषय लेने के लिए बच्चों पर दबाव देते हैं जिसके कारण किशोर में अत्यंत तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और अपनी परेशानी किसी से कह नहीं पाते एवं अपने आपको परिवार से अलग करने लगते हैं और अकेले रहना ज्यादा

(55)

SERIAL NO.- 7: Book Chapter: Smt. Surekha Badole Corona Virus Evum
Maansik Tanaav P.N. 63 (2021).



Cont.....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन



डॉ. बी.डी. अहिरवार
संरक्षक/प्राचार्य



डॉ. पद्मा आचार्य
संपादक

डॉ. रेखा बख्शी
मार्गदर्शक

डॉ. अंजना नेमा
संकलन सहयोग

एन.डी.पब्लिकेशन, नई दिल्ली



Cont.....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

संपादक : डॉ. पद्मा आचार्य

ISBN : 978-81-949767-1-4

वेबीनार में प्राप्त शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

पियर रिव्यू टीम :

1. डॉ. आनंद तिवारी
2. डॉ. नवीन गिडियन
3. डॉ. प्रतिमा खरे
3. डॉ. भावना यादव

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2021

संस्करण : प्रथम

सर्वाधिकार : शासकीय स्वशासी कन्या उत्कृष्ट स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, म.प्र.

प्रकाशक : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मो. 9039390856

अक्षर संयोजन एवं प्रिंटिंग : एन.डी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Cont....

15	कोविड-19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	दीपिका पिपरदे	51
✓16	किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन	प्रीति वर्मा	55
17	आधुनिक जीवनशैली और तनाव	प्रीति उइके	57
✓18	कोविड-19 से उत्पन्न तनाव के विविध आयाम	डॉ. दिनेश कुमार पवन	59
✓19	तनाव प्रबंधन	श्रीमती सुरेखा बड़ौले	63
20	Work Place Strees and its Management	Dr. Rekha Baxy	65
21	Stress - management towards women's job in Raipur city	Saumya Mishra Dr. Abha Tiwari	70
22	Impact of Stress on Human Behaviour and it's Management (Methods of Stress Management)	Dr. Nanda Gurwara	79
23	Corona Virus (Covid-19) and Stress Management	Dr. Basanti Jain	87
24	Nutrition and mental health	Dr. Anjana Nema	90
25	Modern life style and stress	Dr. Rashmi Singh	96
26	Diverse Dimensions of Tension due to Covid-19	Dr. Pratibha Shrivastava	99
27	Stress in the Perspective of Workplace	Dr. Bishnu Deo Mochi	103
28	Effect of Stress on Physical Health in childhood During Covid-19	Mrs. Madhuri Palle	106
29	Impact of stress on human behavior and management	Er. Shrikant Singh Rashmi Singh	109
30	Pandemic covid -19 stress and its management to households in Jabalpur city	Dr. Abha Tiwari	115
31	Teas to relieve and calm stress and anxiety while working from home	Dr. Madhuka Shrivastava Laloraya	123

Cont.....

मानव व्यवहार पर तनाव का प्रभाव एवं प्रबंधन

तनाव प्रबंधन

श्रीमती सुरेखा बड़ौले
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान
शास. कमला नेहरू महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

तनाव मनःस्थिति से उपजा एक विकार है जो मनःस्थिति एवं परिस्थिति के बीच असंतुलन एवं असांमंजस्य के कारण उत्पन्न होता है। तनाव हमारे सोचने समझने की प्रक्रिया को खत्म करता है। जिससे मन अशान्त भावना अस्थिर एवं शरीर अस्वस्थता का अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में हमारी कार्यक्षमता प्रभावित होती है और हमारी शारीरिक गतिविधियाँ या मानसिक विकास में व्यवधान उत्पन्न होता है। ऐसे शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते हैं, जो कि शारीरिक तथा मानसिक बैचेनी को बढ़ावा देते हैं और वह रोग निर्माण का एक कारक बन सकता है जिनमें सदमा, संक्रमण, विष तथा किसी भी प्रकार की चोट शामिल है। जिसका सीधा असर मानव मस्तिष्क पर पड़ता है।

तनाव से तात्पर्य— शारीरिक और भावनात्मक रूप से चिंता महसूस होना है। यह भावना किसी भी घटना या विचार से आ सकती है। जिससे किसी व्यक्ति को निराशा गुस्सा या घबराहट महसूस हो। तनाव की पारम्परिक परिभाषा शारीरिक प्रतिक्रिया पर केंद्रित है। इस विषय पर मनोचिकित्सक हैल शैल ने तनाव शब्द को शरीर की किसी भी आवश्यकता के आधार पर अनिश्चित प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया है और जो ऐड्रिनल और अन्य ग्रन्थियों द्वारा स्रावित होते हैं। तनाव मुख्य रूप से किसी चुनौती या मुश्किल भरे समय में मानव शरीर की प्रतिक्रिया है।

तनाव दो प्रकार का होता है—

1. सकारात्मक तनाव
2. नकारात्मक तनाव

तनाव के लक्षण—

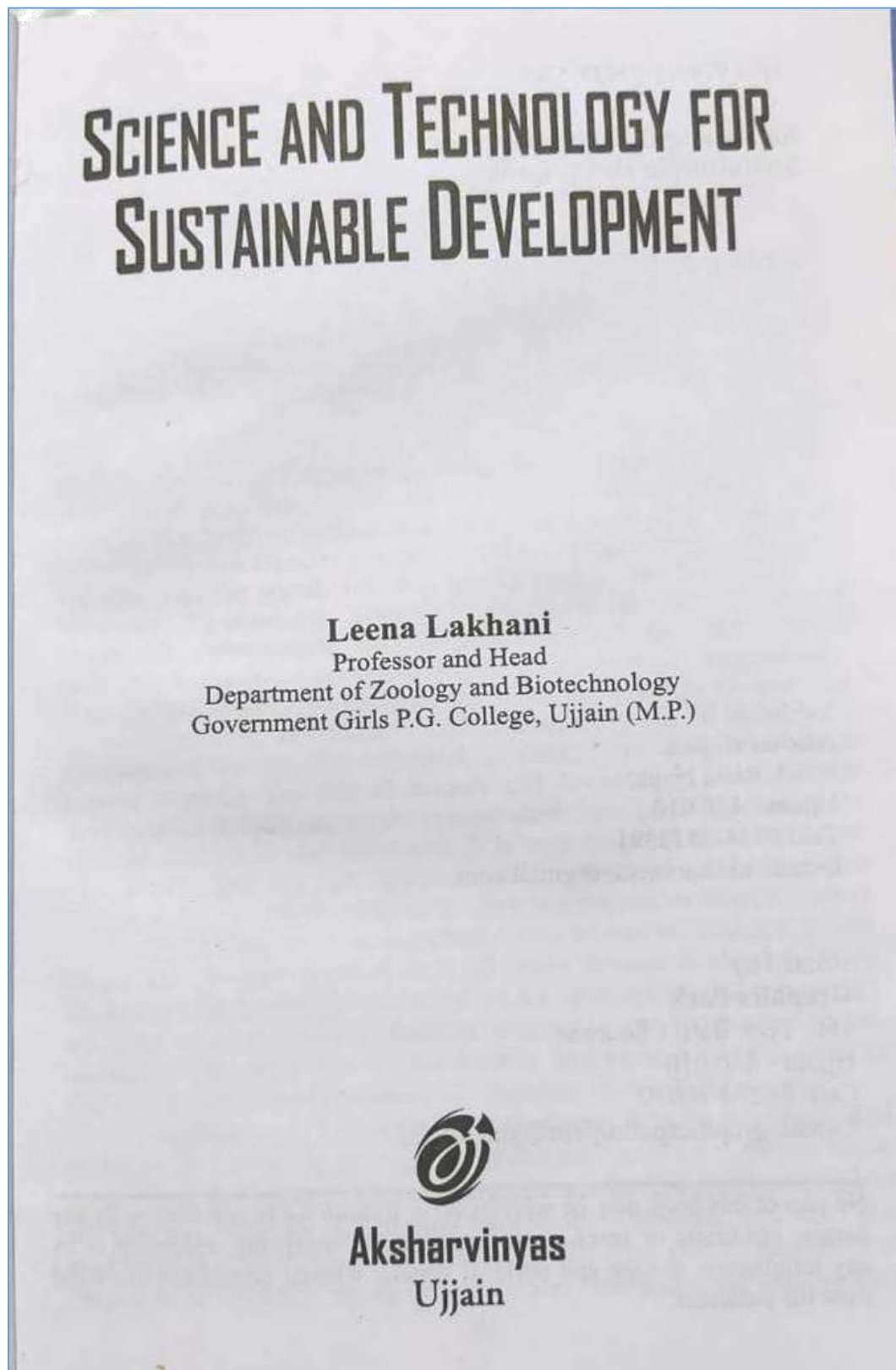
1. सिरदर्द व पीठ दर्द
2. नींद न आना
3. गुस्सा और हताशा होना
4. किसी एक चीज पर ध्यातन न लगा पाना
5. दूसरो को नजर अंदाज करना
6. मन से दुखित होना
7. शारीरिक बैचेनी
8. विस्मृति
9. कार्य क्षमता की कमी

तनाव के कारण—

1. संतुलित आहार का सेवन
2. बदलती शैली
3. मानसिक तनाव में नींद की कमी

(63)

**SERIAL NO.- 8: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Asst. Prof. Pradooshan
ki giraft my fasta hua samposhaneey vikaas.**



Cont.....

10	Accelerator Mass Spectrometry: An Overview and its Application in Environmental Issues - Punam Mehta	50	20	जैविक खेती, भारतीय कृषि का भविष्य - आभा दीक्षित
11	Soil Conservation and its Methods and Techniques for Sustainable Development - Rajkumari Batham and Ulka Yadav	56	21	प्रदूषण की गिरफ्त में फैसता हुआ संपोषणीय विकास - असलम खान
12	Acute Toxicity of the Fresh Water Fish <i>Tilapia Mossambica</i> Exposed to Parathion - Rashmi Patidar	61	22	जलवायु परिवर्तन और उसका पर्यावरण पर प्रभाव - छाया हाईदिया एवं प्रियंका वर्मा
13	Environmental Impact on Diversity of Waterfowl of Solah Sagar Talab, Ujjain (M.P.) - Saroj Vikram Ratnakar and Vikram Ratnakar	66	23	भारत में जैविक खेती एवं संभावनाएँ - प्रियंका वर्मा एवं छाया हाईदिया
14	Disaster Management - Seema Sharma	71	24	प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य - रंजना शर्मा (क्वास)
15	Climate Change and its Impact on the Environment - Seema Trivedi	73	25	पर्यावरण प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य - रेखा सूर्यवंशी
16	How Organic Farming Benefits the Environment - Sheeba Khan and Leena Lakhani	76	26	मानव स्वास्थ्य पर पर्यावरण प्रदूषण का बढ़ता दुष्प्रभाव : एक अध्ययन - सुमन जैन एवं आशा सक्सेना
17	Behavioral Changes in <i>Heteropneustes Fossilis</i> Exposed to Lead Acetate and its Amelioration with <i>Curcuma Longa</i> (Turmeric) - Showkat Ahmad Shah and Lata Bhattacharya	84		
18	Pollution and Human Health - Vikrant Shah	88		
19	New Challenges and Threats to Environment - Vinod Kumar Gupta and S.K. Shastri	94		

vi

vii

M2 PRO

Cont.....

प्रदूषण की गिरफ्त में फैसा हुआ संपोषणीय विकास

में कार्बनडाईऑक्साईड की बढ़ती दर से जीवाश्म के दहन के कारण कार्बनडाईऑक्साईडका अधिकाधिक मात्रा में वायुमण्डल में मिश्रण एवं द्रवी गति से वन विनाश के कारण वन क्षेत्रों में हास होने के कारण कार्बनडाईऑक्साईड के उपयोग में दिनों दिन कमी हो रही है। परिणामस्वरूप ग्रीन हाऊस प्रभाव में वृद्धि हो रही है। ग्रीन हाऊस गैसों का प्रभाव क्रमशः कार्बनडाईऑक्साईड 55 प्रतिशत, क्लोरोफ्लोरो कार्बन 24 प्रतिशत, मीथेन 15 प्रतिशत, नाइट्रोजनआक्साईड 6.0 प्रतिशत है।² इससे वातावरण में गर्मी का माहौल होता है। जिससे वर्षा तथा मृदा नमी में कमी, महासागरीय जल की अम्लता में वृद्धि, हिम टोपियां एवं हिम नदियों के पिघलने आदि विनाशकारी घटनाओं से संपोषणीय विकास प्रभावित हो रहा है।

वर्तमान में प्रत्येक देश औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा संस्कृति का उपलब्ध संसाधनों के विदोहन कर विकास के पथ पर प्रगतिशील है। कारखानों, तापशक्ति गृहों तथा नाभिकीय शक्ति संयंत्रों आदि से उत्सर्जित ऊष्मा, वायु आरोहण से वायुमण्डल में पहुँच रही है। तापीय वायुप्रदूषण संपोषणीय विकास को प्रभावित कर रहा है। वर्तमान युग में वैश्वीकरण औद्योगीकरण, नगरीकरण के साथ मानव जनसंख्या में द्रवी गति से वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारत देश की जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 1210193422 है।³ इतने अधिक बढ़ी हुई जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दिन प्रतिदिन दबाव बढ़ रहा है। जल प्रदूषण से जलीय जीव जगत के अलावा प्राणी जगत को भी संकट पैदा हो रहा है। भारत में 1 लाख से अधिक आबादी वाले 192 नगरों में से केवल 08 नगर ऐसे हैं जिनमें मल-मूत्र और अन्य गंदगी के उपचार या निकास की वैज्ञानिक व्यवस्था है जबकि 62 नगरों में सीवेज उपचार या निकास की थोड़ी बहुत व्यवस्था तथा शेष 72 नगरों में सीवेज उपचार की कोई व्यवस्था नहीं है।⁴ विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रदूषित जल के कारण प्रतिवर्ष 5 लाख बच्चे मर जाते हैं, भारत में प्रतिलाख लगभग 360 व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है और सम्पूर्ण विश्व में 1.5 करोड़ व्यक्ति प्रदूषित जल के कारण मौत के घाट उतर जाते हैं।⁵ जल स्रोत के आधार पर घरेलू अपशिष्ट से जल प्रदूषण, सीवेज से जल प्रदूषण, औद्योगिक अपशिष्ट से जल प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट से जल प्रदूषण तथा जल भण्डारण के आधार पर धरातलीय जल प्रदूषण, झील जल प्रदूषण, समुद्री जल प्रदूषण, भूमिगत जल प्रदूषण आदि ने संपोषणीय विकास को प्रभावित किया है। एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रदूषित जल से होने वाली बीमारियों से लगभग 7 करोड़ 30 लाख कार्य दिवस नष्ट हो जाते हैं और

Cont.....

Leena Lakhani
Ph.D., F.I.S.C.A., F.V.M.S.,
F.A.S.E.A., F.I.C.H.E., F.S.L.Sc.



Professor of Zoology at Govt. Girls P.G. College, Ujjain (A Centre for Excellence). Over 42 years of teaching experience.

Sixty research papers and articles have been published in various International and National Peer Reviewed Journals. Chief Editor for special issue on 'Social Issues and Environmental problems' in an International Journal *Granthaalayah* and has also authored a book on 'Manual of Experiments in Biotechnology'. More than 100 research papers are presented in International, National Seminars. Convened and organized so many National Seminars, Workshops, Training programs and Faculty Development Programs related with Environment, Science and Molecular Biology, Use of ICT tools in Digital Pedagogy, FDP on Research Article Writing and Online Academic Presentation.

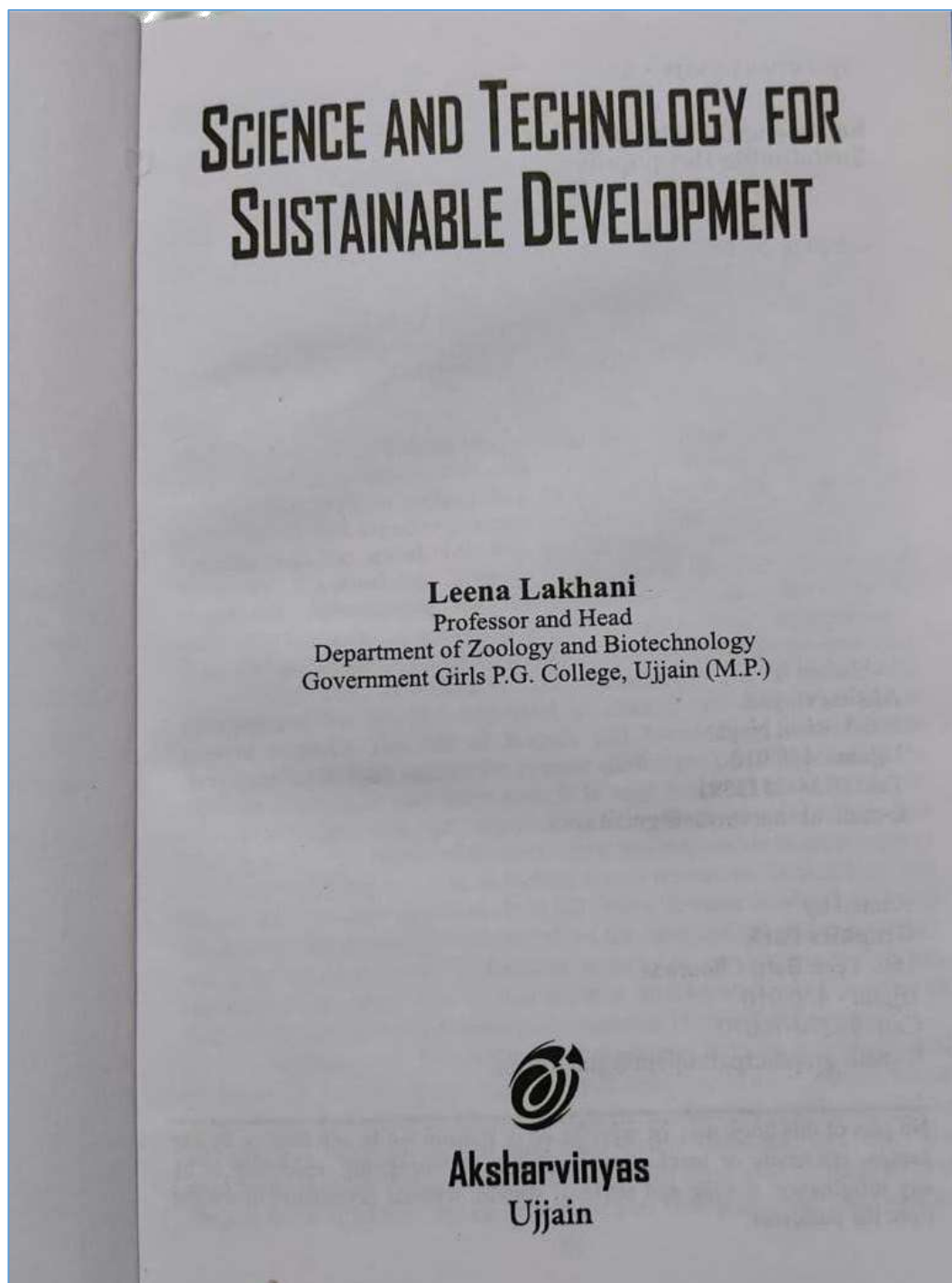
Awarded with Outstanding Performance for 2015 by Action for Sustainable Efficacious Development and Awareness (ASEA), Rishikesh, India; International Best Teacher Award for 2016 by International Science Community Association, Indore, India; Life Time Achievement Award for 2017 by Shri Shivaji Education Society Amravati's, Science College, Nagpur, India.; Honored by Municipal Corporation of Ujjain, India on Teachers Day on 5th September 2017; and Awarded with Prof. Ram Kumar Sharma Memorial Award 2020 for Outstanding Performance and Lasting Contribution in the field of Life Sciences by ASEA, Rishikesh India.

Aksharvinyas
F-6/3, Rishi Nagar
Ujjain - 456 010 (M.P.)
Phone: 0734-2512591
Email: aksharvinyas@gmail.com

₹ 600.00
ISBN 978-93-85438-57-8
9 789385 438578 >

POCO SHOT ON POCO M2 PRO

**SERIAL NO.- 09: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Asst. Prof. Bharteey
Arthvyavastha par corona virus ka prabhav PN. 129-139 (2020).**



INDIAN PHILOSOPHICAL BELIEF
IN CONTEXT OF CORONA
भारतीय दार्शनिक विश्वासः
कोरोना के संदर्भ में

सम्पादक

डा० अनिलेश कुमार सिंह
वि.प्र., दर्शनशास्त्र विभाग,
के.जी.के.पी.जी. कॉलेज, भुरादाबाद

डा० शिवपूजन सिंह यादव
दर्शन शास्त्र विभाग,
के.जी.के.पी.जी. कॉलेज, भुरादाबाद

Published By:

ANU BOOKS

Delhi Meerut Glasgow (UK)
Visit us: www.anubooks.com

Cont.....

Indian Philosophical Belief in Context of Corona

भारतीय दार्शनिक विश्वास एवं परम्परागत विश्वासः
कोरोना से बचाव के लिए

First Published: June 2020

ISBN: 978-93-87922-08-2

Price : 500 /-

Copyright © **EDITOR**

Contributors are solely responsible for the ideas expressed in their submitted articles for publication. Editors and publisher are not responsible for it. Contributors are also responsible for the cases of plagiarism.

Printed by :

AnVi Composers, New Delhi

Published by :

Anu Books

H.O. Shivaji Road, Meerut, 01214007472, 8800688996

Branch : Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837

Glasgow (UK) +447586513591

Cont.....

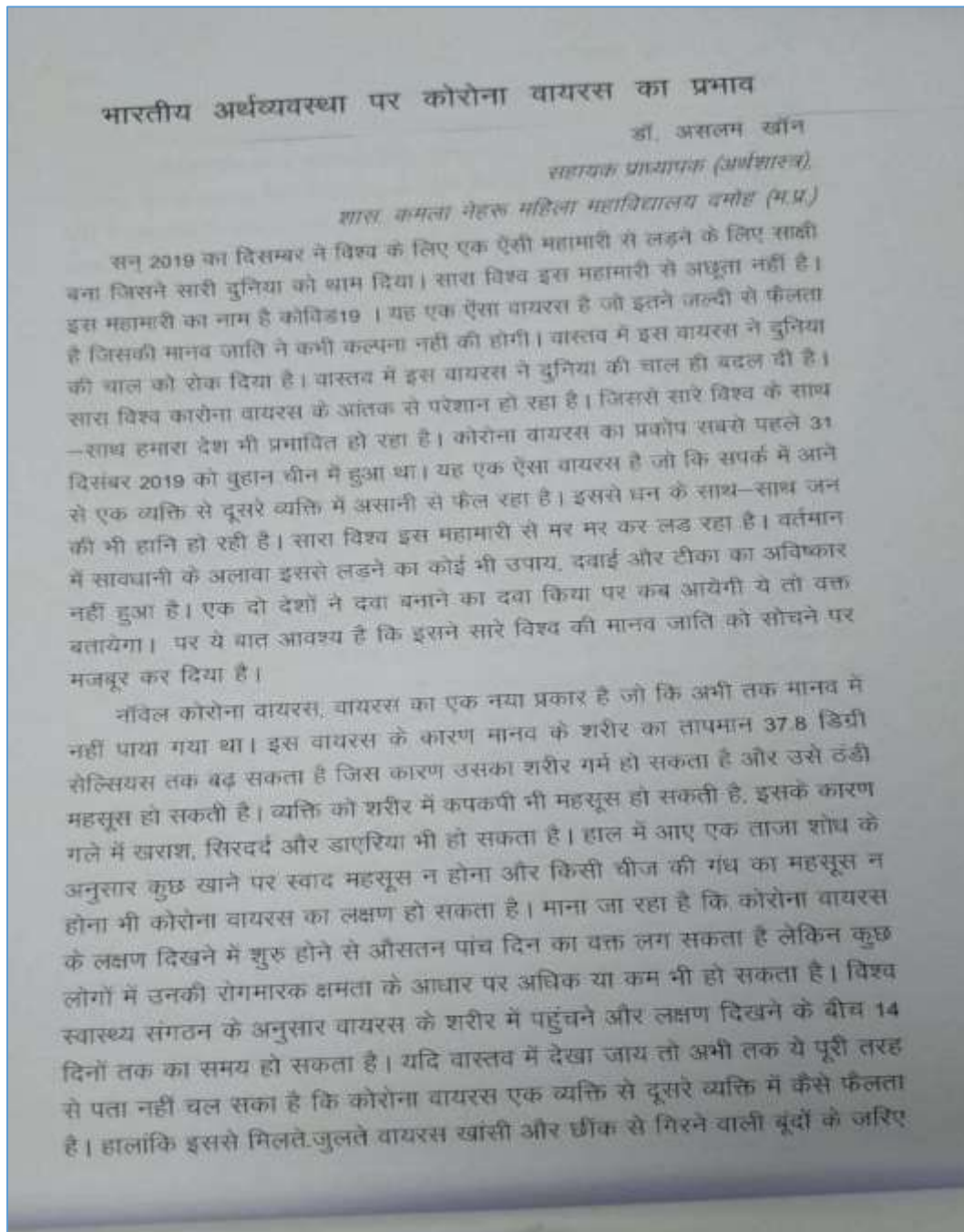
Content

- **Indian Traditional Beliefs and Values:
In Context of Prevention from COVID-19**
Dr. Narender Singh, Rashmi Chahal 1
- **Impact of COVID-19 on Health Sector**
Dr. Anupma Srivastava, Diksha Mishra 9
- **COVID-19: Socio-Religio-Cultural Aspects in
Relation to Prevent Corona Spread**
Mukesh Kumar 22
- **Science of Living : The Great Indian Cultural
Heritage**
Dr. Anil Kumar 29
- **Impact and Preventions of Covid -19 on Indian
Economy**
Dr. Kamal Singh 38
- **Indian Philosophical Heritage, Traditional Belief
and Values: In Context of Prevention from Covid-19**
Dr. Reeta Kumari Dixit 44
- **Indian Traditional Beliefs and Practices for
Preventing Corona Virus**
Dr. Shaifali Agarwal, Shilpi Saxena 48
- **Role of Indian Traditional Culture and Values
in the Prevention of Corona Pandemic**
Dr. Bhawna Bisht 62
- **Indian Philosophy in Context of Pandemics:
The Path to a Healthy, Happy and Sustainable Life**
Sqn Ldr Toolika Rani (Retd.) 66
- **Changes in Traditional Beliefs and Processes in Hotels due
to Covid 19**
Sanjay Wadhwa 77

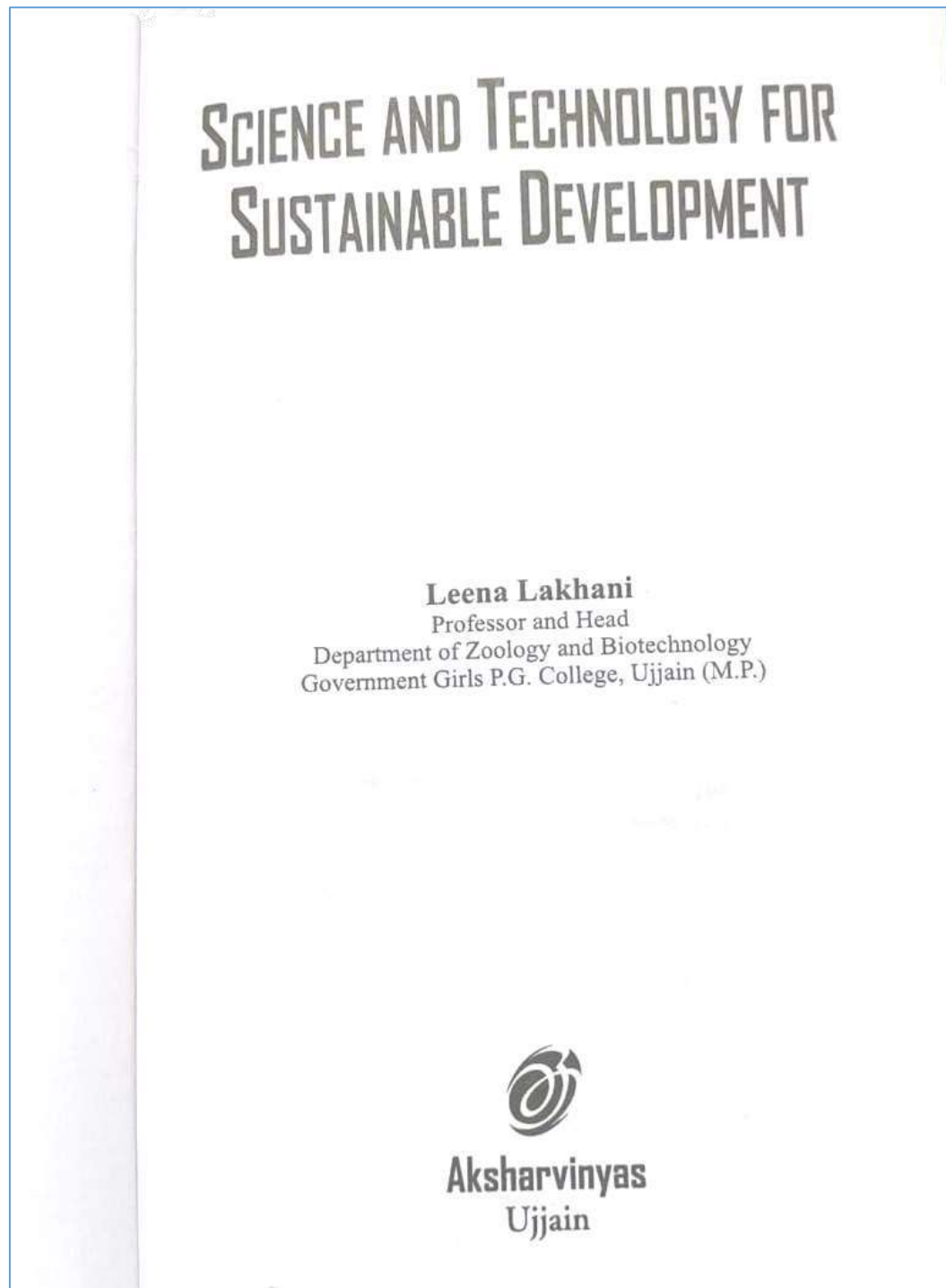
Cont.....

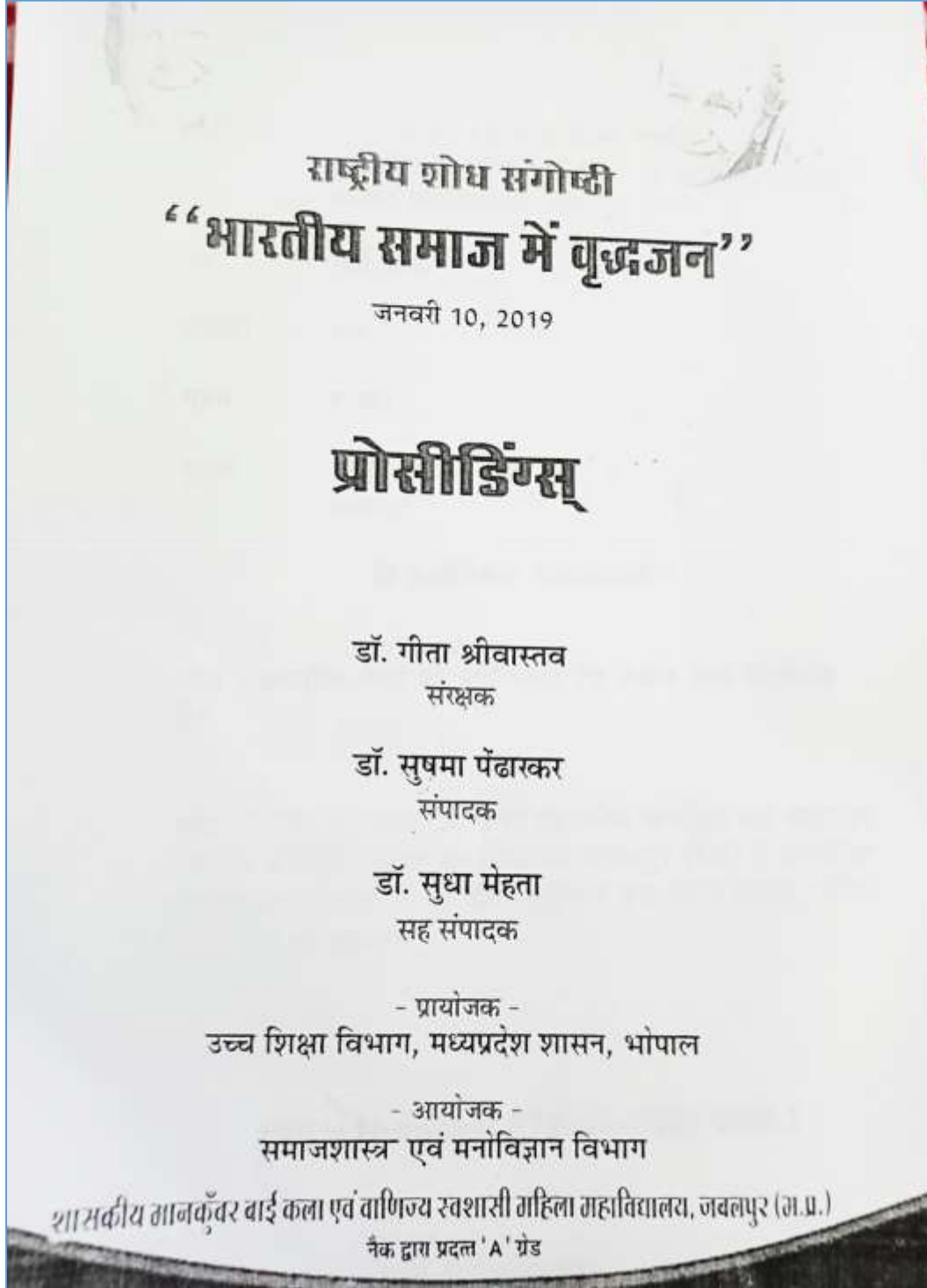
• कोविड-19 के लक्षण एवं दुष्प्रभाव— एक अध्ययन डॉ. विमलेश कुमार	91
• वर्तमान में कोरोना वायरस मानव जाति पर एक संश्लेषण डॉ. सुभा शिंदे	97
• कोरोना संकट और तीन दर्शन महेश्वर सिंह	101
• कोविड-19 और सांक्रांतिक संक्रमण नीलू जेकरिया	106
• कोविड-19 : मानवता के लिए अभिशाप में छिपा पर्यावरण हेतु वरदान डॉ. प्रियंका यादव	109
• कोरोना वायरस और भारतीय अर्थव्यवस्था पुष्पम खोसला	115
• भारतीय संस्कृति व परम्परागत विश्वास एवं मूल्य कोविड - 19 के बचाव के संदर्भ में डॉ. शिल्पा बसवाल	122
• भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना वायरस का प्रभाव डॉ. अरुण कुमार	129
• कोविड-19 : उत्तर कोरोना काल में उच्च कक्षा कक्ष के परिवर्तित रूप जमा मुता	134

Cont.....



SERIAL NO. - 10: Book Chapter: Dr. Mudita P. Shrivastav. Vridhaawastha evum Shaskhiya Neetiya (2019).





Cont.....

प्रकाशक : समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान विभाग
शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी
महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

वर्ष : मार्च 2019

प्रतियाँ : 100

मूल्य : ₹ 300

मुद्रक : डिज़ाइन एन प्रिंट
जबलपुर

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नोट : प्रकाशित लेखों की प्रमाणिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है।

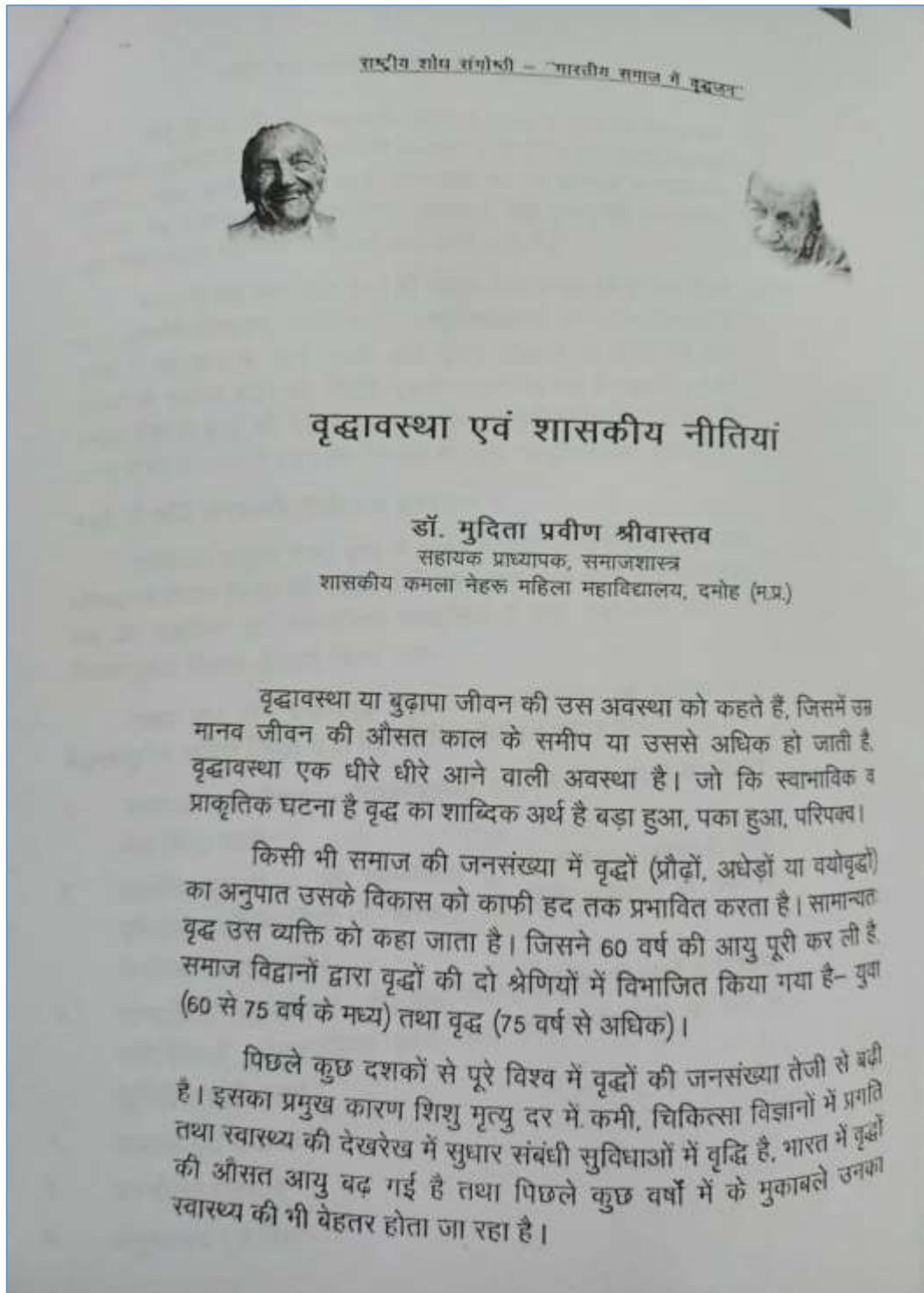
नोट : दिनांक 10 जनवरी 2019 को शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) में आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी – 'भारतीय समाज में वृद्धजन' में प्रस्तुत/प्रेषित शोध-पत्रों का प्रकाशन

ISBN Number: 978-93-5351-898-1

Cont.....

क्र.	विवरण	लेखक	पेज नंबर
39	वृद्धावस्था एवं शारदाकीय नीतियां	डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	248
40	वृद्ध महिलाओं की स्थिति की पृष्ठभूमि	डॉ. नंदिनी भारिल्ल, डॉ. भरतेश भारिल्ल	252
41	वृद्ध लोग : समाज की सामूहिक जिम्मेदारी	प्रो. पद्मा महेश्वरी	256
42	समाज एवं वृद्धावस्था और समाधान	पूनाम ललखेर	261
43	समाज एवं वृद्धावस्था	प्रभाकर सिंह	275
44	भारतीय समाज में वृद्धजन की भूमिका	राजेश कुमार मर्सकोले	286
45	समाज और वृद्धावस्था	डॉ. साधना सिंह बिसेन	296
46	"भारतीय समाज में वृद्धजन" समाज एवं वृद्धावस्था	पी. मालवे/उडके	302
47	भारतीय समाज में वृद्धावस्था की चुनौतियाँ	डॉ. (श्रीमति) किरण कुमार	309
48	भारतीय समाज में वृद्धजन: समस्याएँ और कानून	डॉ. तृप्ति उकास	313
49	वृद्धावस्था के प्रति सोच एवं सुझाव	डॉ. वन्दना गुप्ता	321
50	वृद्धावस्था- शारीरिक दुर्बलता से अधिक मानसिक दुर्बलता	डॉ. मनीष खरे	324
51	वृद्ध व्यक्तियों की समस्याओं के कल्याण कार्यक्रम व सरकारी प्रयास	डॉ. शोभना पाण्डेय	329
52	भारतीय समाज में वृद्ध की स्थिति	डॉ. श्रीमती किरण शुक्ल	333
53	समाज एवं वृद्धावस्था	डॉ. मुक्ता व्योहार, डॉ. विनीता महोदिया	338
54	भारतीय समाज में वृद्धावस्था एक चुनौती	डॉ. शिखा गुप्ता	344
55	वृद्धजन के प्रति बदलते प्रतिमान: सामाजिक चुनौती	डॉ. श्रीमति कुसुम गौतम	347
56	Elderly persons: Assets or Liabilities	Dr. (Mrs.) Debmitra Roy, Dr. G.K. Soni,	353
57	बच्चों के व्यक्तित्व विकास में वृद्ध की भूमिका	डॉ. सुष्मा मेहरा	356
58	भारतीय समाज में वृद्ध आश्रम एवं कल्याणकारी योजनाएँ	अमृत लाल झारिया, आनंद प्रकाश झारिया	360

Cont....



SERIAL NO. - 11: Book Chapter: Shri Ankit Kumar Mahirshi Dayanand krit Bhashye Niruktprabha (2018).

12

महर्षिदय्यालब्धवृत्तभाष्ये निरुक्तप्रभावः

अद्वितीयगुणः*

[illegible]

*शेषः चतुर्दशीतिरसंस्कृतप्रधानकेन्द्रम्,
जयपुरस्थानेहर्म्यवासीपदात्म्यः, नवदेहाय।

110 दशमस्कन्धः

महर्षिदयानन्दभाष्ये निरुक्तस्य कः प्रभाव इति ज्ञानाश्रयं निरुक्तं किमिति
एकलेखनः कल्पनानामस्य द्वितीयेऽध्यायेऽस्य निर्वचनद्वारेण निर्वचनाप्रसूतमिति ।
अथ च निरुक्तं केतुपुत्रस्य श्रेयमिति चोद्यते । अस्य च पञ्चविधमनुयुते यिते । तदुह-
"वर्णागमो वर्णविषयश्च द्वौ चोपायौ वर्णविकारनाशौ ।

घातोस्तद्वर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधत्रिरुक्तम्॥” (निरुक्तम्)

१. वर्णागमः - कश्चिद् भिन्नो वर्ण आनीयते, "मित्रवदागमा भवन्ति" इति। यथा
हंस इति नस्य वर्णस्यागमः।

२. वर्णविपर्ययः - वर्णयोर्विपर्ययो भवति। यथा सिंह इति हिंसिधातोर्वर्णविपर्यये सति सिद्धयति।

३. वर्णविकारः - वर्णस्य लोपो भवति। यथा 'राज' इत्यत्र 'राजन्' शब्दे सस्य "अ" इति विकारो भवति।

४. वर्णनाशः - वर्णस्य नाश एव भवति। यथा 'त्वा' इत्यत्र 'त्वाम्' इति शब्दे मकारनाशः।

५. धातोस्तदधातिशयेन योगः - धातोर्धात्वर्धातिशयेन योगः क्लृप्ते, यदा महां रौतौति मयुर इत्यत्र रौतेः रमणं करोतीति धात्वर्धातिशयेन योगो भवति।

महर्षिदयानन्दस्य निर्वचनानाम्प्रकारस्सर्वथा वास्काप्रभवितो दृश्यते । वास्कस्य

महर्षिदयानन्दभाष्ये प्रभावमवलोकयितुं निर्वचनानां प्रकारा अवश्यतया द्रष्टव्या एव ।
अत्र पूर्वं यास्कः किमिव शब्दानां निर्वचनानि करोतीत्येतत् सन्दर्शयते ।

- तद्धेषु पदेषु स्वरसंस्कारौ (स्वरः शब्दाकृतिः) समर्थौ प्रदीक्षितौ गुणौ (विकारौ) अन्वितौ स्याताम्, तथा तानि निर्दूषात्।

अन्विनेऽर्थऽपदेशिके विकारेऽर्थनित्यः परीक्षेत केनचिद् वृत्तिसामान्येन।

- अनन्वितेऽथेऽप्रादेशिके विकारेऽपान्त्यः पराक्षतः।
- अविद्यमाने सामान्येऽप्यक्षरवर्णसामान्यत्रिबुद्धयः।

- न त्वेव न निर्गुण्यात्।

- न संस्कारमाद्विद्येत । विषयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति ।

- यथार्थं विधत्तौः सत्त्वमयेत् ।

- प्रतम्, अवतम्, इति धात्वादी एव सिध्यन्ते।

- अस्तेर्निवृत्तिस्थानेष्वदिलेपो भवति । स्तः, सनीति ।

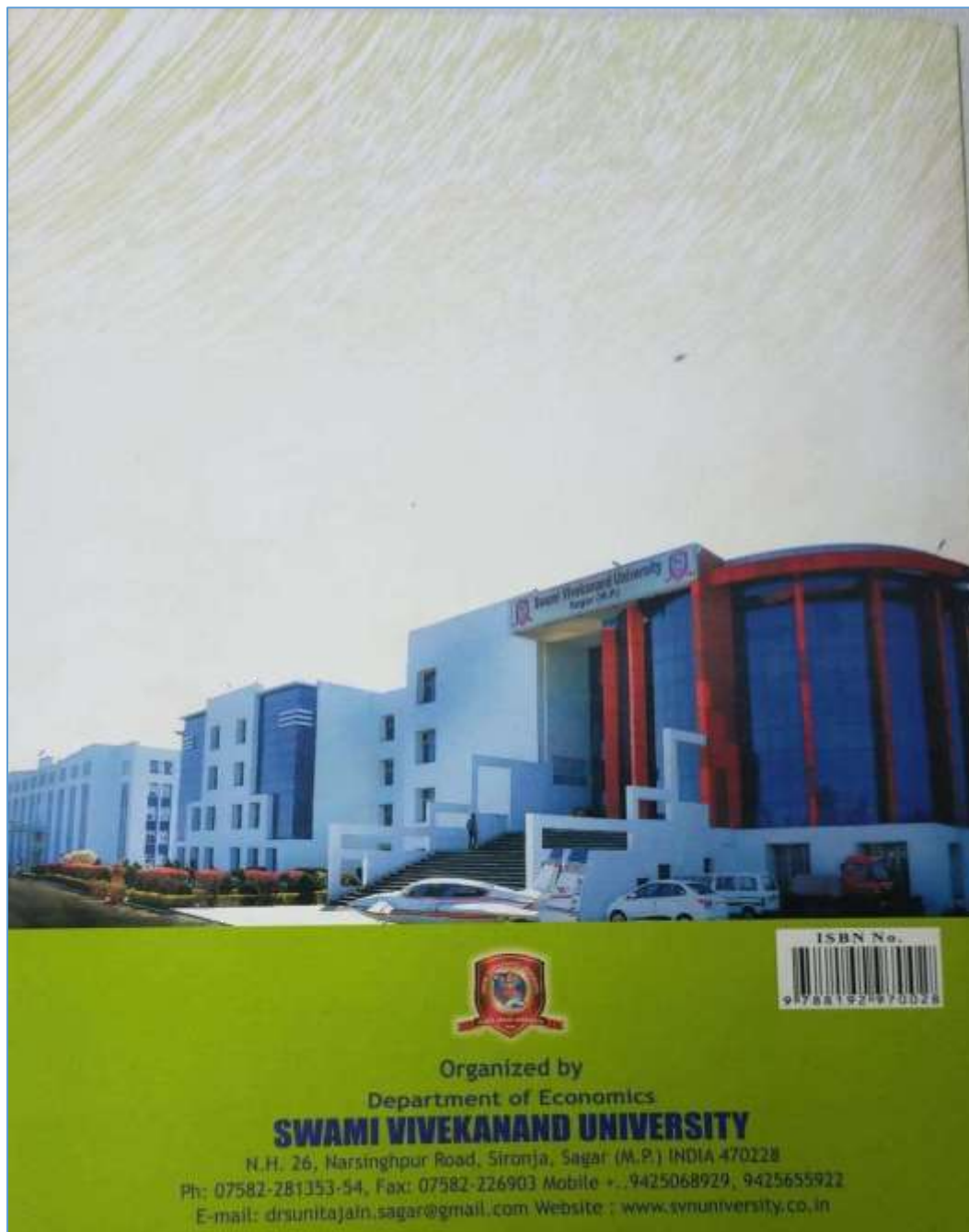
- अस्तानि कृतस्थानि ध्यादत्तेषां भवति । एताः
- अथापि अन्तस्त्रेपो भवति । गत्वा, गतीमति ।

- अथापि उपधात्वेणो भवति । जग्मुः, जग्मुरिति ।

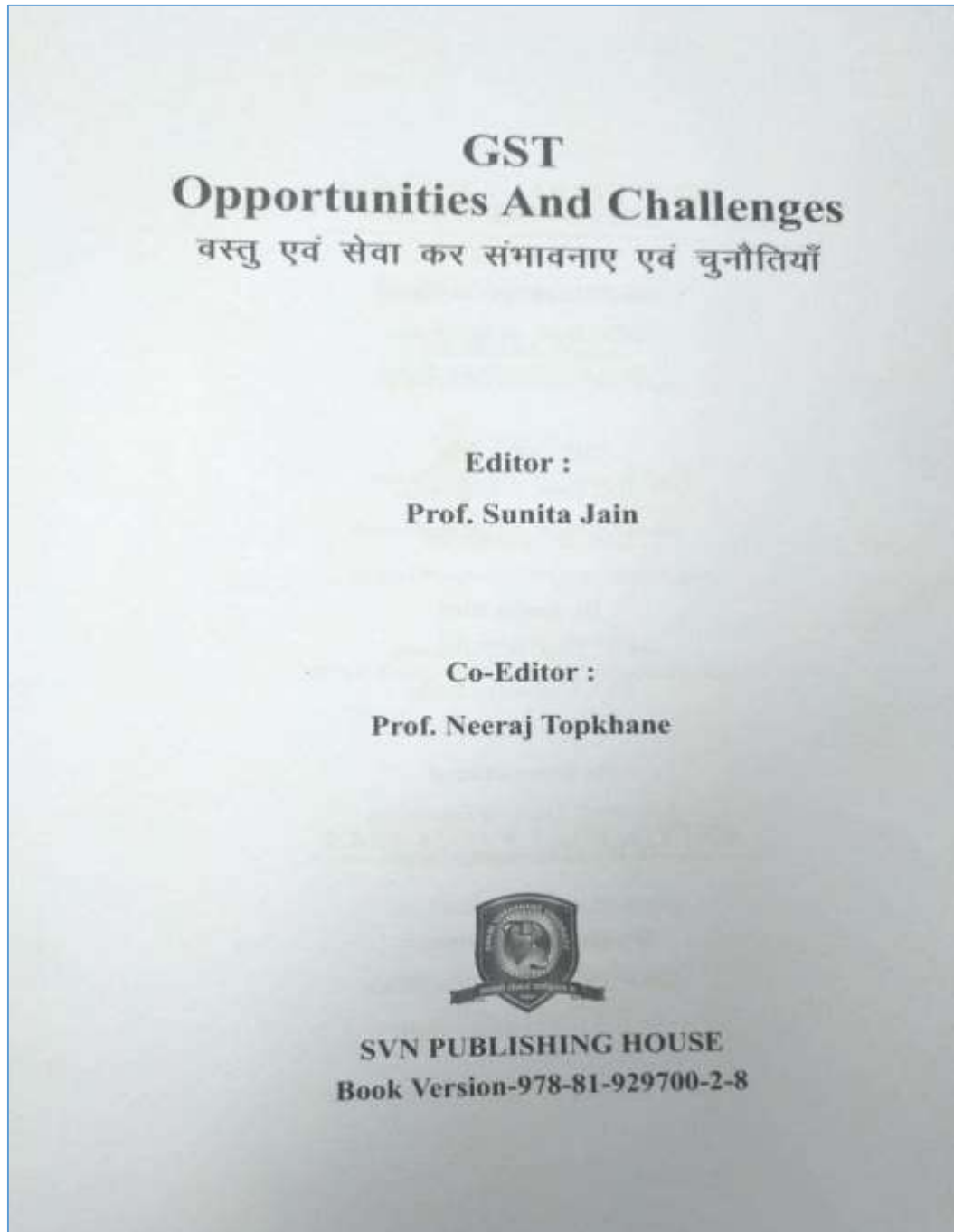
- अथापि उपधाधिकारो भवति । राजा, दण्डोति ।

यागुत्तमसः 111

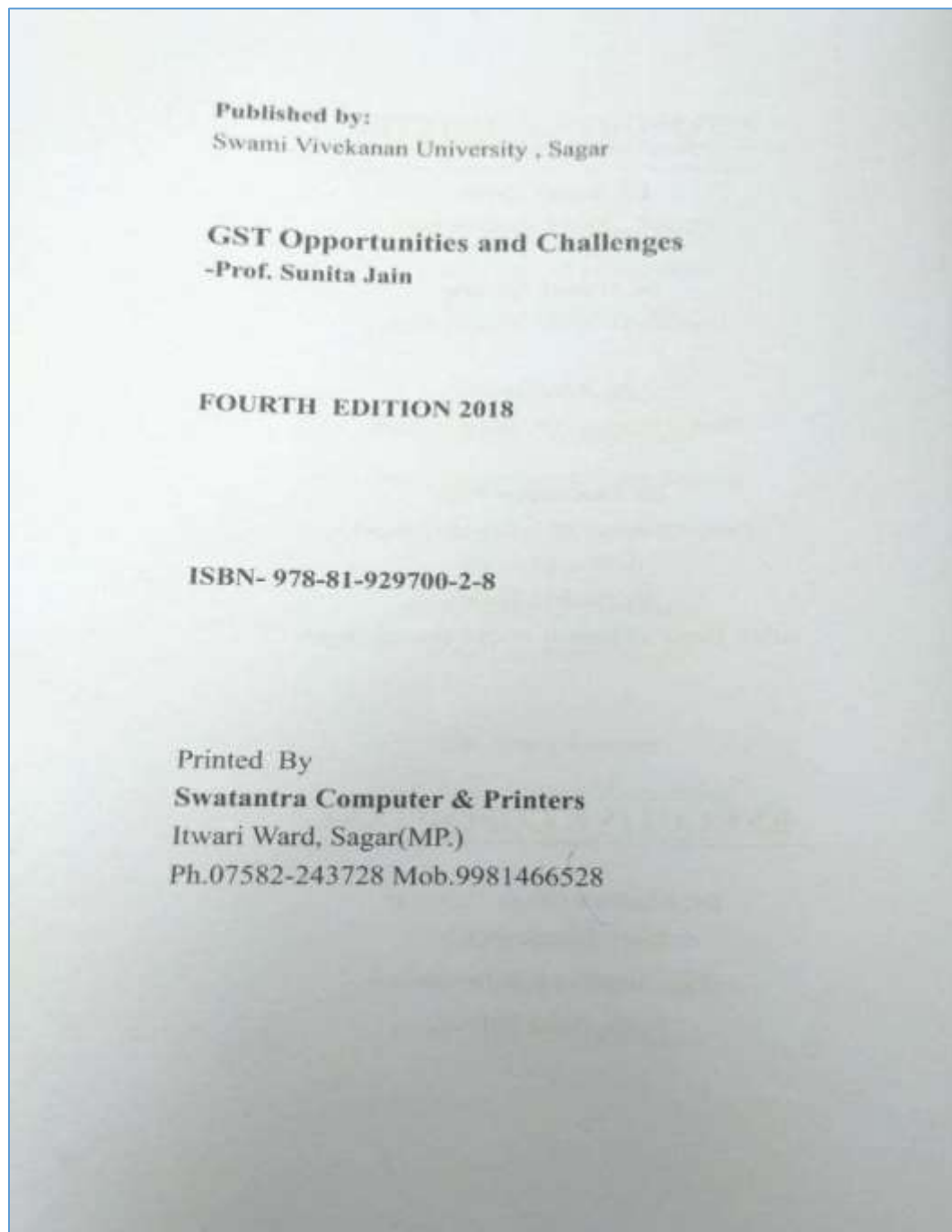
**SERIAL NO. - 12: Book Chapter: Dr. Aslam Khan Asst. Prof. Rajasva
Vradhhi ka Rambaan Upaay G.S.T. PN: 37-47(2018)**



Cont.....



Cont.....

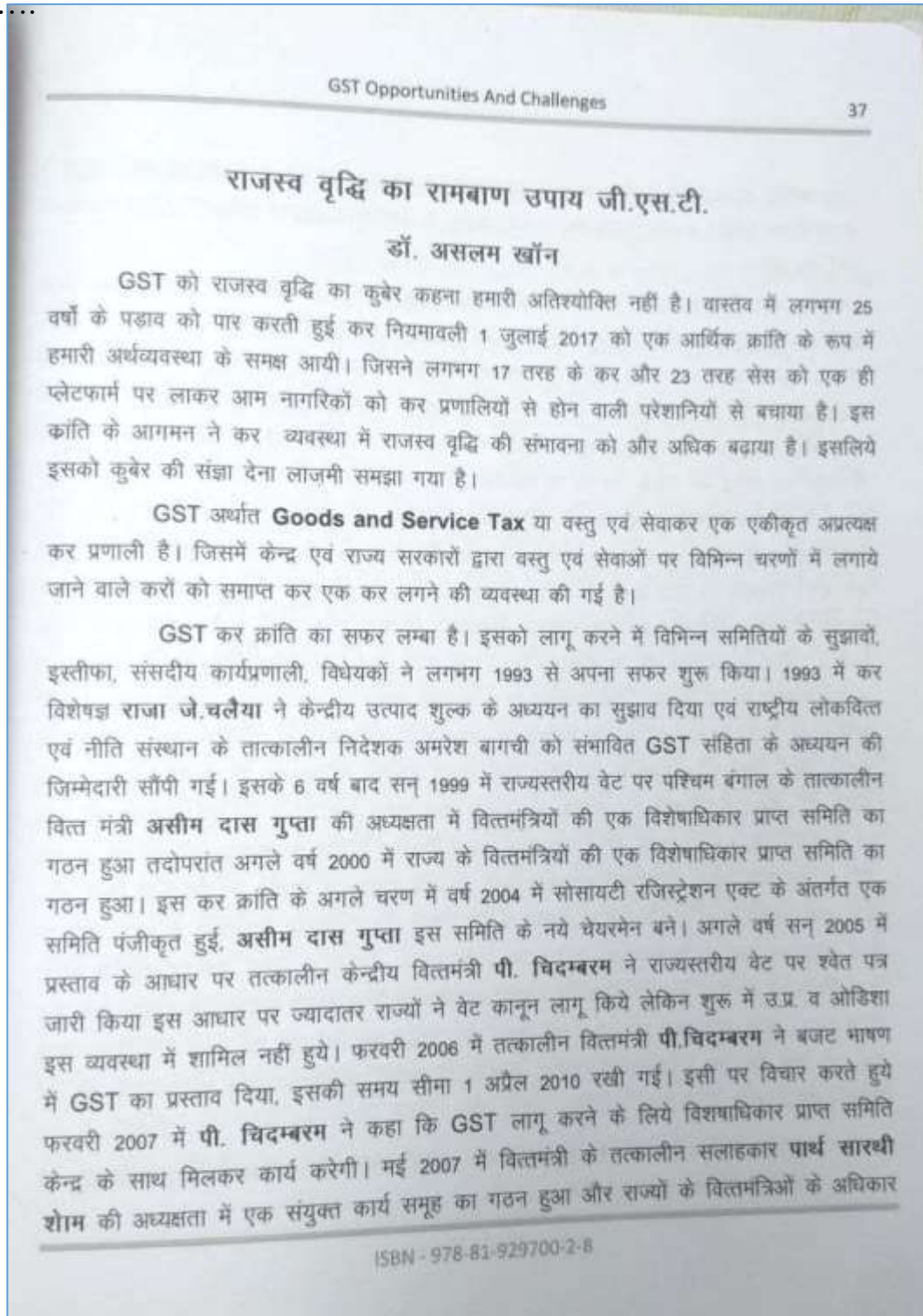


Cont.....

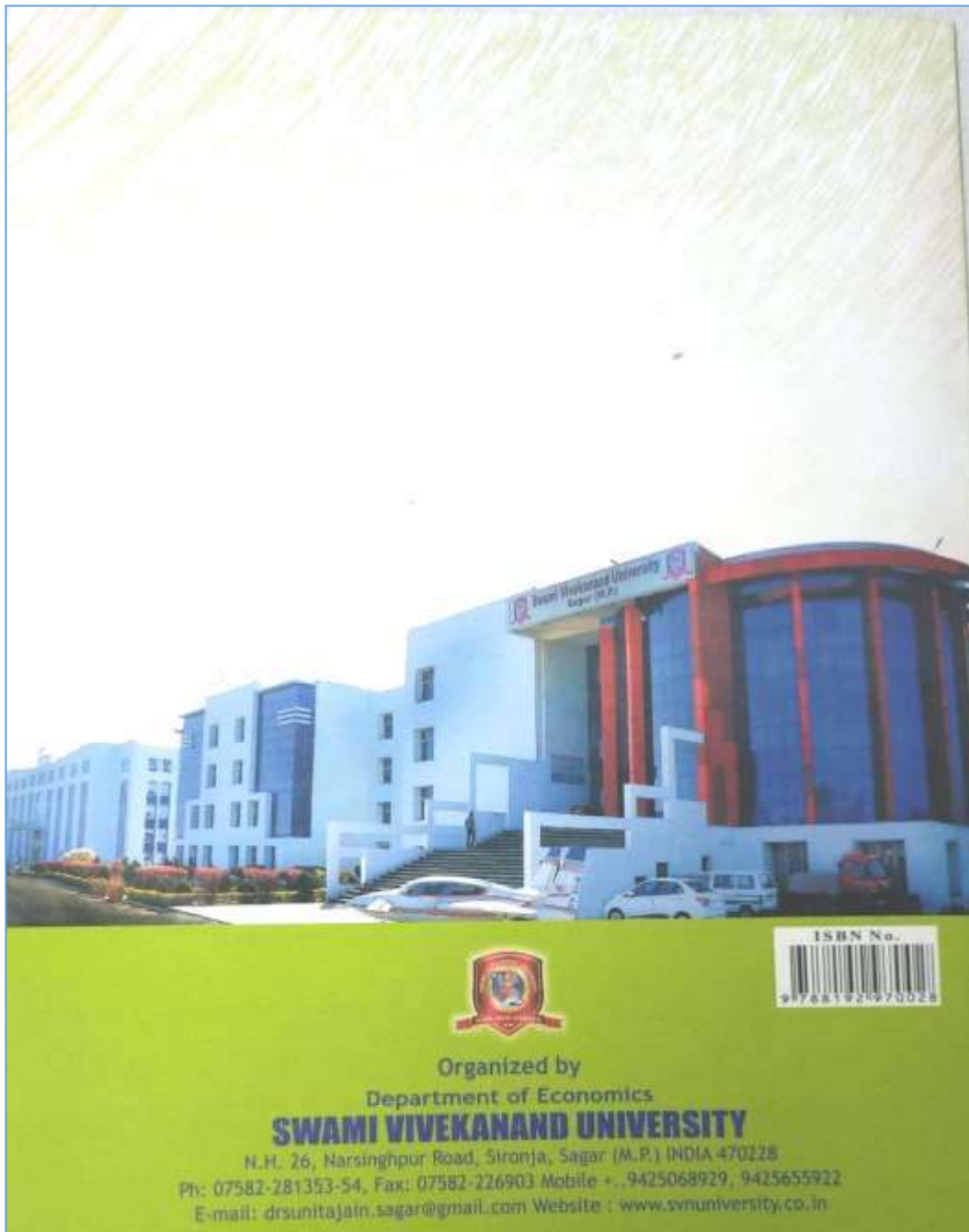
CONTENTS

1. जी.एस.टी. - कितना लाभकर	1
- डॉ. शोभा जैन	
- डॉ. अशोक नरगं	
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में जी.एस.टी. की उपयोगिता एवं प्रभाव	6
- डॉ. सुनीता जैन	
- डॉ. गिरीश मोहन बुढे	
3. जी.एस.टी. - भारतीय अर्थव्यवस्था में एक आर्थिक सुधार	17
- डॉ. श्रीमती शक्ति जैन	
4. जी.एस.टी. की अवधारणा एवं विशेषताएं	26
- डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव	
5. भारत में वित्तीय क्षेत्र में नवाचार एवं उसके प्रभाव (जी.एस.टी. के विशेष संदर्भ में)	33
- डॉ. सविता जैन	
6. राजस्व वृद्धि का रामबाण उपाय जी.एस.टी.	37
- डॉ. असलम खॉन	
7. वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.): प्रभाव (विश्लेषात्मक अध्ययन)	44
- डॉ. डी. एन. नामदेव	
- डॉ. अमित कुमार तिवारी	
8. जी.एस.टी. : एक सकारात्मक बदलाव	49
- डॉ. खुदैजा परवीन अंसारी	
9. भारतीय अर्थव्यवस्था के परिदृश्य में वस्तु एवं सेवा कर	56
- डॉ. वीरेन्द्र सिंह मटसोनिया	
- डॉ. हरिनारायण विश्वकर्मा	
10. भारतीय बीमा क्षेत्र में जी.एस.टी. का प्रभाव	63
- अनुराधा घोरसिया	
11. संगठित क्षेत्र की उद्यमी महिलाओं पर जी.एस.टी. का प्रभाव	72
- कु. सुजाता परी अहिरवार	
12. GST: One Nation & One Tax	77
- Prof. Dr. Narendra Kumar Thapak	
- Mr. Nishant Dubey	
13. Basic Concepts And Features Of Goods And Services Tax In India (GST)	85
- Dr. Harsh Singh	
14. Goods and Services Tax in India	92
- Dr. Rupali Saini	

Cont....



**SERIAL NO. – 13 : Book Chapter: Smt. Jaya Ahirwar Asst. Prof. Gareebi
aur Arthik Vikaas (2018).**



Cont.....

वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ			
अनुक्रमणिका			
क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
1	भारतीय आर्थिक विकास में डॉ. अनेदकर की भूमिका	डॉ. के. पी. अहिरवार	16
2	Indian economics growth in dollars, Strategies, radical remedies of golden crown jewel Medical tourism ?	Dr. S. K. Bhatnagar, Director.	19
3	IMPACT OF COST OF CULTIVATION ON FORMERS INCOME (Special Reference to Damoh District)	Dr. Tulsiram Dahayat Dr. Keshav Tekam	26
4	IMPLEMENTATION OF GOOD AND SERVICE TAX IN INDIA: PROSPECTS AND CHALLENGES	Dr. Vinod Sen, Dr. Anand Sugandhe	31
5	TREND OF URBANIZATION AND CHALLENGES IN BHOPAL	Dr. Kuntum Mathur & Seema Yadav	38
6	Impact of fiscal sector reforms on Small Scale Industries	Dr. Pooja Chaturvedi, Dr. Anu Looma Prof. Dr. N. C. Jain	43
7	"A Study of Working capital analysis of industry in M.P. with special reference to HEG Ltd Mandideep"	Dr. Preeti Shrivastava, Dr. Prof. N.C. Jain	48
8	Rural Electrification And Agriculture in Damoh District	Dr. Ramesh Athiya	56
9	A Socio Legal Study of Farmer's Interest Transition to Legal Rights	Mr. Shailendra Pachori	61
10	Challenges in Agriculture development for the Indian economy	Dr. BASANTI MATHHEW MERLIN	66
11	RURAL TOURISM AND SUSTAINABLE LIVELIHOOD	Poonam Mishra	71
12	Demonetization and its Impact on Indian Society	Dr. Mamta Awasthy	77
13	IMPACT OF CLIMATE CHANGE ON THE INDIAN ECONOMY	Ramesh Prasad Aharwal	80
14	Study of Electric Energy Management for a Machine System	P.L. Jain and Santosh Kumar Jain	83
15	मुद्रारहित लेनदेन : भारतीय अर्थव्यवस्था की बड़ी चुनौती	डॉ. हरिनारायण विरवर्मा	86
16	जुन्नारदेव में कृषि विकास की चुनौतियाँ	डॉ. कुसुम माथुर, भविता राजुरकर	90
17	पावरलूम उद्योग में श्रम कल्याण की आवश्यकता	श्री राजेश काले	95
18	भारतीय औद्योगीकरण के क्षेत्र में महिला उद्यमी की भूमिका	देवी सिंह ठाकुर	98
19	मध्यप्रदेश में सोयाबीन फसल की उत्पादकता	प्रभाक्षी तिवारी	101
20	मध्यप्रदेश में गन्ने की आधुनिक खेती, आज की आवश्यकता एक अध्ययन	डॉ. विनोद काले	105
21	"भारत में विमुद्रीकरण एक अध्ययन"	डॉ. गजेन्द्र कुमार रावत, डॉ. अजित जैन	108
22	गरीबी और आर्थिक विकास	जया अहिरवाल	112
23	विमुद्रीकरण (कम नगद अर्थव्यवस्था की ओर कदम)	डॉ. कीर्ति शुक्ला, डॉ. ए. के. पाण्डेय	115
24	"भारत में रोजगार नियोजन की संभावनाएँ"	डॉ. कमर इफ़हार	120
25	भारत में गरीबी व जनांकिकीय परिवर्तन	श्रीमती मीना तिवारी	123
26	"ग्रामीण गरीबी और उसके प्रभाव"	डॉ. नीता ठाकुर	127
27	पराम्परागत जल स्रोत एवं संकट	मनीष कुमार वर्मा एवं डॉ. प्रभाकर शिखा	132
28	"मध्यप्रदेश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का क्रियान्वयन, मूल्यांकन एवं प्रभाव"	डॉ. पूजा तिवारी	134
29	गरीबी : एक चुनौती	शाहीन परवीन (अतिथि विद्वान)	137
30	भूमंडलीकरण के भंवर में समकालीन समाज	डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	140
31	बेरोजगारी एक विचारणीय मुद्दा	डॉ. अवधेश कुमार जैन एवं डॉ. डी. के. नेमा	142
32	वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ वस्तु एवं सेवाकर (जी. एस. टी.)	*विद्यानन्द पाण्डेय डा० वी०पी० उनियाल	143

Cont.....

वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ

गरीबी और आर्थिक विकास

जया अहिरवाल
अर्थशास्त्र विभाग

वर्तमान में भारत तेजी से विकास कर रहा है, परन्तु अभी भी देश के लिए गरीबी एक चुनौती बनी हुई है। भारत में लगभग साढ़े पाँच दशक के आयोजन के बाद भी जनसंख्या का लगभग 30 प्रतिशत भाग गरीबी से ग्रस्त है और अभाव में जी रहा है। भारत में अनुमानतः विश्व की सारी गरीब आबादी का तीसरा हिस्सा रहता है, 2010 में विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार भारत के 32.7: लोग रोजाना US + 1.25 (लगभग 60 रु. प्रतिदिन) की अंतर्राष्ट्रीय गरीबी की रेखा के नीचे रहते हैं और 68.7: लोग रोजाना की US + 2 के कम में गुजारा करते हैं।

भारत में गरीबी की बहस नहीं नहीं है आजादी के पहले और बाद में भी लगातार गरीबी बहस के केन्द्र में रही है। आरंभिक दौर में आजाद भारत की सरकारों ने गरीबी उन्मूलन को हमेशा ही अपने वरीयता वाले लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन "गरीबी हटाओ" जैसे नारों के बावजूद यह बदस्तूर जारी रही। 1957 में इंडियन लेबर कांग्रेस में गरीबी को परिभाषित करने की कोशिश की गई उसमें शुरू से ही दो तरह के दृष्टिकोण में खराब रहा है। पहला समूह वह जो गरीबी की परिभाषा को इस तरह से निर्धारित करना चाहता था कि जिससे कि इस रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या कम दिखाई दें। इस सोच के तहत पेट भरा होना गरीब न होने के लिए पर्याप्त माना गया। इस कांग्रेस के बाद योजना आयोग ने एक बर्किंग ग्रुप बनाया था जिसने भारत के लिए आवश्यक कैलोरी उपभोग की अवधारणा पर आधारित गरीबी रेखा का प्रस्ताव किया। इस अवधारणा के अनुसार शहरों में 2100 कैलोरी तथा गाँवों में 2400 कैलोरी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन से कम उपभोग करने वालों को गरीब माना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने आर्थिक विकास के सूचक के रूप में प्रतिव्यक्ति आय को स्वीकार किया है। आर्थिक विकास एक व्यक्तिनिष्ठ अवधारणा है इसलिए इसकी मात्रा का निर्धारण संभव नहीं हैं, फिर भी इसके मापन के संबंध में अनेक प्रयास किए गए हैं यह मापक किसी परिमाणात्मक चर के आधार पर नहीं बल्कि जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले अनेक चरों से बने सूचकांक के आधार पर विकास की माप करते हैं। यदि किसी देश की प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो, निर्धनता एवं भुखमरी में कमी हो अथवा साक्षरता तथा जीवन की प्रत्याशा में वृद्धि हो तो ऐसी स्थिति में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को आर्थिक विकास का सूचक माना जा सकता है।

अब यहाँ यह प्रश्न उठता है, कि आर्थिक विकास व गरीबी के मध्य किस प्रकार का सम्बंध पाया जाता है, सीधा विपरीत। अर्थात् विकास की दर बढ़ने से गरीबी में वृद्धि होती है या इसके अनुपात में गिरावट होती है। जैसा कि हमें ज्ञात है पिछले 60 वर्षों की तुलना में भारत की आर्थिक स्थिति में बहुत से परिवर्तन हुए हैं इस काल में भारत एक पिछड़ी अर्थव्यवस्था के कुचक्र से निकलकर विकासशील अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ है। इस समयावधि में भारत की प्रति व्यक्ति आय, उत्पादन, पूँजी निर्माण, रोजगार, आर्थिक व सामाजिक ऊपरी पूँजी में विस्तार, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि प्राप्त हुई है परन्तु क्या अर्थव्यवस्था के प्रगति करने से निर्धनता के अनुपात में कोई कमी हुई है अथवा नहीं।

अतः यह जानना रुचिकर होगा कि कुल जनसंख्या में गरीब व्यक्ति की संख्या और प्रतिशत अनुपात में कितना परिवर्तन हुआ है। आँकड़ों से पता चलता है कि 1973-74 और 1987-88 के दौरान गरीबी का अनुपात जो 1973-74 में 54.3 प्रतिशत था कम होकर 1983 में 44.5 प्रतिशत हो गया, परन्तु गरीबों की कुल संख्या लगभग 32 करोड़ बनी है। 1993-94 में भी गरीबों की संख्या 32 करोड़ ही थी चूँकि 1987-88 और 1993-1994 के दौरान गरीबी में कमी की दर 3.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष और गरीबों की संख्या कम होकर 26 करोड़ हो गयी। परन्तु अगले पाँच वर्षों में जबकि अर्थव्यवस्था की विकास दर 6.5 प्रतिशत प्रति वर्ष के उच्च स्तर पर पहुँच गयी, गरीबों की संख्या 26 करोड़ से कम होकर 25 करोड़ हो गई— केवल एक करोड़ कम। इससे जाहिर है कि गरीबी में कमी की दर धीमी हो गई जिससे विकास प्रेरित रणनीति का उदारीकरण-वैश्वीकरण के काल में अपनाई गयी थी कि प्रभावित पर प्रश्नचिन्ह लग गया।

भारत के गरीबी के मापक के रूप में आवश्यक कैलोरी उपभोग को अपनाया गया है जिसके अनुसार वह आदमी गरीब माना है, जो किसी तरह दो वक्त अपना भोजन जुटा सके। यूनिसेफ स्वस्थ शरीर के लिए प्रोटीन, वसा, लवण, लोहा और विटामिन जैसे अन्य तत्वों को जरूरी बताता है जिसके अभाव में मनुष्य कुपोषित रह जाता है, तथा उसकी बौद्धिक शारीरिक क्षमताएं प्रभावित होती हैं, लेकिन गरीबी रेखा तो केवल जिंदा रहने के लिए आवश्यक भोजन से आगे नहीं बढ़ती। इसके अलावा यह व्यवस्था यह मानकर चलती है कि जनसंख्या के इस हिस्से का स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन, घर, स्वच्छ

शास.कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह

SERIAL NO. – 14 : Book Chapter: Dr. Aslam Khan Bhoomandli karan ke
Bhavar me Samkaleen Samaaj P.N. 140-14 (2018)

ISBN:978-81-926009-4-9

वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी 6 जनवरी 2018



प्राचार्य एवं संरक्षक
डॉ. के. पी. अहिरवार

संपादक
डॉ. तुलसी राम दहायत

आयोजक
शास. कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (मप्र.)

Cont.....

वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ			
अनुक्रमणिका			
क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
1	भारतीय आर्थिक विकास में डॉ. अशोक कुमार की भूमिका	डॉ. के.पी. अहिरवार	16
2	Indian economics growth in dollars; Strategies, radical remedies of golden crown jewel Medical tourism ?	Dr. S. K. Bhatnagar, Director.	19
3	IMPACT OF COST OF CULTIVATION ON FORMERS INCOME (Special Reference to Damoh District)	Dr. Tulsi Ram Dahayat Dr. Keshav Tekam	26
4	IMPLEMENTATION OF GOOD AND SERVICE TAX IN INDIA: PROSPECTS AND CHALLENGES	Dr. Vinod Sen, Dr. Anand Sugandhe	31
5	TREND OF URBANIZATION AND CHALLENGES IN BHOPAL	Dr. Kusum Mathur, Seema Yadav,	38
6	Impact of fiscal sector reforms on Small Scale Industries	*Dr. Pooja Chaturvedi (Dr. Anuragendra Ind. (G.U.M.C. 200)	43
7	"A Study of Working capital analysis of industry in M.P. with special reference to HEG Ltd Mandideep"	Dr. Preeti Shrivastava, Dr. Prof. N.C. Jain	48
8	Rural Electrification And Agriculture in Damoh District	Dr. Ramesh Athiya	56
9	A Socio Legal Study of Farmer's Interest Transition to Legal Rights	Mr. Shalendra Pachori	61
10	Challenges in Agriculture development for the Indian economy	Dr. BASANTI MATHWU MERLIN	66
11	RURAL TOURISM AND SUSTAINABLE LIVELIHOOD	Poonam Mishra.	71
12	Demonetization and its Impact on Indian Society	Dr. Mamta Awasthy	77
13	IMPACT OF CLIMATE CHANGE ON THE INDIAN ECONOMY	Ramesh Prasad Aharwal	80
14	Study of Electric Energy Management for a Machine System	P.L. Jain and Sanjosh Kumar Jain	83
15	मुद्रारहित लेनदेन : भारतीय अर्थव्यवस्था की बड़ी चुनौती	डॉ. हरिनारायण शिवकर्मा	86
16	जुन्नारदेव में कृषि विकास की चुनौतियाँ	डॉ. कुसुम माधुर, नविता राजुरकर	90
17	पावरलूम उद्योग में श्रम कल्याण की आवश्यकता	श्री राजेश काले	95
18	भारतीय औद्योगीकरण के क्षेत्र में महिला उद्यमी की भूमिका	देवी सिंह ठाकुर	98
19	मध्य प्रदेश में सोयाबीन फसल की उत्पादकता	प्रभाक्षी तिवारी	101
20	मध्य प्रदेश में गन्ने की आधुनिक खेती, आज की आवश्यकता एक अध्ययन	डॉ. विनोद काले	105
21	"भारत में विमुद्रीकरण एक अध्ययन"	डॉ. गजेन्द्र कुमार रावत, डॉ. अजित जैन	108
22	गरीबी और आर्थिक विकास	जया अहिरवाल	112
23	विमुद्रीकरण (कम नगद अर्थव्यवस्था की ओर कदम)	डॉ. कीर्ति शुक्ला, डॉ. ए.के. पाण्डेय,	115
24	"भारत में रोजगार नियोजन की संभावनाएँ"	डॉ. कमर इजहार	120
25	भारत में गरीबी व जनजातिकीय परिवर्तन	श्रीमती मीना तिवारी	123
26	"ग्रामीण गरीबी और उसके प्रभाव"	डॉ. नीता ठाकुर	127
27	परम्परागत जल स्रोत एवं संकट	मनोज कुमार वर्मा एम. डी. प्रकाश मिश्र	132
28	मध्य प्रदेश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का क्रियान्वयन, मूल्यांकन एवं प्रभाव	डॉ. पूजा तिवारी	134
29	गरीबी : एक चुनौती	शाहीन परवीन (अतिथि विद्वान)	137
30	भूमंडलीकरण के भंवर में समकालीन समाज	डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	140
31	बेरोजगारी एक विचारणीय मुद्दा	डॉ. अवधेश कुमार जैन एवं डॉ. डी.के. नेमा	142
32	वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ वस्तु एवं सेवाकर (जी. एस. टी.)	*विद्यानन्द पाण्डेय डा० वी०पी० अनियाल	143

Cont....

वर्तमान आर्थिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ

भूमंडलीकरण के भंवर में समकालीन समाज

डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव
सहप्राध्यापक (सामाजिकशास्त्र)
शास. कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह (नए 200)

भूमंडलीकरण के अंतर्गत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक राजनैतिक प्रबंधन की आवश्यकता का विश्लेषण करते हुए समीर अमीन (1997), जो कि भूमंडलीकरण एवं तीसरी दुनिया के देशों के प्रति उसके आशय के संबंध में विचार प्रकट करने वाली एक महत्वपूर्ण एवं चर्चित शख्सियत रहे हैं। कहते हैं कि पूंजीवादी व्यवस्थाओं का भूमंडलीकरण कोई नई बात नहीं है, अपितु आधुनिक समय में गुणात्मकता की दृष्टि से इसने एक कदम आगे बढ़ा दिया है साथ ही शब्दों के बीच गहराती निर्भरता ऐसे समय पर प्रकट होती है जबकि संघर्ष की समस्या अत्यधिक गंभीर रूप लें चुकी है तथा युद्ध के बाद की गर्जना अथवा स्थितियों ने अवरुद्धिकरण की स्थिति पैदा कर दी है। भूमंडलीकरण का प्रभाव केवल व्यापार तक ही सीमित नहीं है वरन् यह उत्पादन व्यवस्थाओं, तकनीकी, आर्थिक बाजारों एवं सामाजिक जीवन के अनेक अन्य पहलुओं को पर्याप्त रूप से प्रभावित करता है। नया भूमंडलीकरण राष्ट्र-राज्यों द्वारा अर्थ-प्रबंधन की सामर्थ्य एवं कार्यकुशलता का क्षरण तो करता है। परंतु यह उनके अस्तित्व को नकारने अथवा समाप्त करने की बात नहीं।

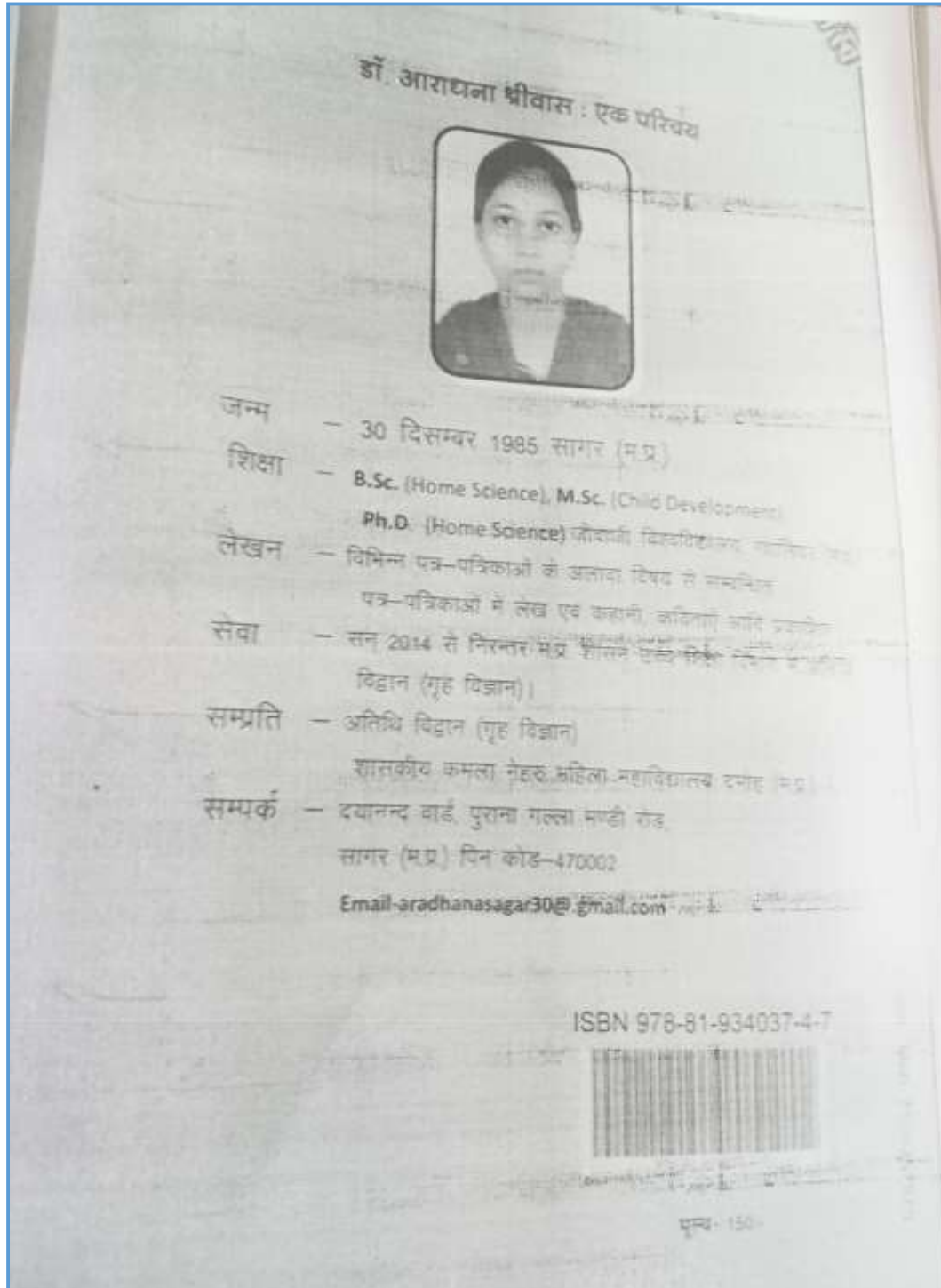
आर्थिक भूमंडलीकरण के प्रति राजनैतिक प्रतिक्रिया स्वरूप संजातीयता की अवधारणा का अभ्युदय भूमंडलीकरण का एवं अन्य महत्वपूर्ण आयाम है समीर अमीन कहते हैं 'वर्तमान युग निश्चित रूप से ऐसे सामूहिक सामाजिक तादात्म्य से युक्त जागरण अथवा पुनर्जागरण का परिचायक है जो किसी राष्ट्र राज्य अथवा सामाजिक वर्ग द्वारा परिभाषित जागरण अथवा पुनर्जागरण से बिल्कुल भिन्न है' क्षेत्रवाद, भाषिक एवं सांस्कृतिक दावे, जनजातीय अथवा जाति संबंधी, निश्ठा किसी धार्मिक समुदाय से लगाव आदि इस पुनर्जागरण के विच्छिन्नता रूप हैं। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि अफ्रीका में राष्ट्रीय एकता की विभिन्नता ने परस्पर स्पर्धा रखने वाली शक्तियों के वैध नवीकरण के आधार के रूप में संजातीयता को जन्म दिया है। भारत, अफगानिस्तान, पूर्वी यूरोप, भूतपूर्व सोवियत गणराज्य, भूतपूर्व यूगोस्लाविया, पश्चिम यूरोप और यहां तक कि स्पेन में राष्ट्रीय एकता पर सवालिया चिन्ह लगा है। आधुनिक एवं शक्ति संपन्न देशों एवं भूमंडलीकरण की पक्षधर व्यवस्थाओं द्वारा प्रस्तुत दावों का बारीकी से निरीक्षण करने पर हम पाते हैं कि राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का बाजार के मात्र एक गुण द्वारा प्रबंधन मात्र एक कल्पना ही है।

भूमंडलीकरण के ध्रुवीकरण का स्वरूप बाजारों के विस्तारीकरण के साथ ही साथ सामाजिक शक्तियों का अभ्युदय बहुलवाद का विरोध एवं अल्पसंख्यक को के भूलतत्त्व उभरकर संपूर्ण सामाजिक संरचना में अपनी अवधारणा की छाप एक राष्ट्र हित के रूप में सक्रिय होने लगा। जैसे-जैसे समाज को यह अधिकार प्राप्त होने लगा कि भूमंडलीकरण अर्थव्यवस्था सामाजिक, आर्थिक स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीय विकास के लक्ष्य को बहुलवादी तीसरी दुनिया के देशों में एक रूपता के स्वरूप विभाजन पर एवं विध्वंसकारी लक्ष्य के साथ प्रक्रिया को बल प्रदान करने हेतु जैसे ही सामाजिक दृष्टि के महत्वपूर्ण प्रतिभाग में आर्थिक मौलिकता का संबंध एक विकल्प के रूप में स्थानांतरित होता है जिसने विभिन्न सामाजिक समूहों पर अपना दुःप्रभाव डालना आरंभ किया।

शास. कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह

140

**SERIAL NO. -15 : Book Chapter: Dr. Aradhana Shrivastava Fast Foods Ka
balko ke sharir ka mansik vikaas par prabhav ka aadhaya**



Cont.....

